आभार व धन्यवाद

मनुष्य ज्ञान की खोज में जब अपने पग बढ़ाता है तो उकी जिज्ञासा की शुद्धता व पवित्रता उसको निश्चित ही शुद्धतम ज्ञान से अवगत करा देती है। और मनुष्य जब शुद्धतम ज्ञान से संलिप्त हो जाता है तो बाह्य वातावरण में कितनी भी रूढ़ियां उसके सामने आए, परन्तु शुद्धतम ज्ञान सदा उसका मार्ग प्रशस्त करता रहता है। और वह कदापि कलूषित भाव से ग्रसित नहीं होता।

परमपिता परमात्मा ने ज्ञान की अमूल्य धरोहर वेद के रूप में प्रदान की है । उसी वेद की महिमा को अपने प्रवचनों में अभिव्यक्त करने वाले जन्म-जन्मान्तरों की ऋषि आत्मा पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णादत्त जी महाराज के प्रवचनों का अमृतमयी ज्ञान भी जिज्ञासु मानव को ज्ञानामृत से तृप्त करता रहता है।

गुरुदेव की कृपा अनेक जिज्ञासुओं को प्राप्त हुई, उन्हीं मे से विशेष है बहन चित्रलेखा जी, जिनकी गुरुदेव मे अगाध श्रद्धा है,जिनका पूर्वजन्मों से ही गुरुदेव से संबंध रहा है, जिनके आवास, पानीपत में गुरुदेव के द्वारा कई यज्ञ हुई, साथ ही प्रवचन भी , अपने आवास पर हुए गुरुदेव के प्रवचनों को "मानवीय विज्ञान" नामक पुस्तक को अपने माता पिता श्रीमती शकुंतला देवी जी व श्री पण्डित जमनादास जी की स्मृति में प्रकाशित की जा रही है, जो बहन चित्रलेखा जी का अपने माता पिता के प्रति अगाध श्रद्धा का परिचायक है, हम बहन जी के इस महान ज्ञान को प्रकाशित करने में सहयोग करने के लिए उनका आभार व्यक्त करते है और धन्यवाद ज्ञपित करते है निश्चित ही बहन जी पर गुरु जी का आशीष जन्म जन्मांतरों से तो प्राप्त है ही पर इस वाममार्गीय युग में भी इस महान आत्मा के प्रति श्रद्धान्वित है यह बहन जी की भी दिव्यता है हम पुनः बहन जी का सहयोग के लिए आभार व्यक्त कराते है।

यज्ञानुष्ठान

आचार्य जयवीर शास्त्री

2-BHK, 52, द्वितीय तल, ग्रीन वुड सिटी,

बागपत बाईपास रोड, मेरठ, उतर प्रदेश-250002

चल दूरभाष 9412061565, 08755555286

१ महर्षि विश्वामित्रःराजर्षि से ब्रह्मर्षि-०६-०५-१९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं है और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वे परमपिता परमात्मा ही दृष्टिपात आते रहते है। क्योंकि संसार की कोई ऐसी वस्तु नहीं हैं, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो। वह अनन्तमयी माने गएं हैं और उनका ज्ञान और विज्ञान वह प्रायः अनन्तता में दृष्टिपात आता रहा है।

परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के, वर्तमान के काल तक कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ है जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। इसीलिए हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान की वृत्तियाँ प्रायः मानव को प्राप्त होती रही है। जितना भी ज्ञान और विज्ञान है वह मानो दो रूपों में विभक्त हो गया है एक भौतिकवाद है तो एक आध्यात्मिकवाद है। मानो दोनो प्रकार के वादों में, सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के, मानव इसके ऊपर अन्वेषण करता रहा है और विचारता रहा है, कि ये जो परमपिता परमात्मा का जो अनूठा जगत है मानो देखो, जिस स्थली पर रचना हो रही है उस स्थली वाले को भी ज्ञान नही हो रहा है। अन्तरात्मा मानो देखो, जिस स्थली पर पञ्चमहाभूतां के लोक में वास करता हैं उसे यह प्रतीत नही है। बेटा! कैसी अनन्तता है। मानो सृष्टि के प्रारम्भ से मानव इन वाक्यों के ऊपर विचार-विनिमय करता रहा है और विचारता हुआ बड़ी ऊर्ध्वागति में प्रवेश कर जाता है। परन्तु अन्त में जो वह जान लेता है तो मौन हो जाता है। कैसी विचित्रता है?

वास्तविक निर्माणवेत्ता

इसीलिए परमपिता परमात्मा का ये जगत बडा अनूठा है। अरे, एक अनुपम है। माता के गर्भस्थल में, मानो निर्माण हो रहा है। हम जैसे शिशुओं का निर्माण हो रहा है। निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। परन्तु उस मेरी भोली माता को प्रतीत नहीं, है कि कौन निर्माण कर रहा है। मानो निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। जिस स्थली पर हो रहा है, उसको ये प्रतीत नहीं, कौन निर्माणवेत्ता है। माता के गर्भस्थल में जब निर्माण हुआ, तो मानो देवताओं का एक वास बन गया, देवताओं की एक स्थली बन गई और वह देवता अपना, अपना क्रियाकलाप कर रहे है। परन्तु माता को प्रतीत नही, कि कौन अमृत दे रहा है? कौन तेजोमयी बना रहा है? मेरे प्यारे! कौन प्राणों को प्रदान कर रहा है। कहाँ नस नाड़ियों का निर्माण हो रहा है।

माता के गर्भस्थल में सर्वत्र विज्ञान

वैदिक साहित्य में यह आया है कि ७२ करोड ७२ लाख १० हजार २०२ नाड़ियों का निर्माण हो रहा है। परन्तु मेरी भोली माता उससे वंचित रहती है, कि कौन निर्माण कर रहा है। कहीं हृदय का निर्माण हो रहा, है, कही मेघा, ऋतम्बरा और प्रज्ञावी इन बुद्धियों का निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! वह प्रभु कितना अनन्तमयी रचयिता है, एक आनन्दवत् है। जिसके ऊपर, हमारे यहाँ ऋषि मुनि ये विचारते रहे है कि ये संसार अपने में कितना अनूठा और कितना विचित्र माना गया है। एक दूसरे का सहयोग, एक दूसरे की प्रतिभा में यह जगत लगा हुआ है। लोक लोकान्तरों में चले जाओ, उसकें विज्ञान में, माता के गर्भस्थल में तो सर्वत्र संसार का, जितना भी विज्ञान की प्रतिभा है वह वहाँ निहित हो रहा है। ये परमपिता परमात्मा का अनन्तमयी विज्ञान है।

ब्रह्म का सूत्र

मेरे प्यारे! देखो, बाह्य जगत में जब लोक लोकान्तरों में मानव प्रवेश करता है, तो मुनिवरों! एक मण्डल दूसरे का सहायक बना हुआ है। जैसे प्राणीमात्र एक दूसरे की आभा में मानो आभायित हो रहा है। इसी प्रकार ये लोक लोकान्तर भी मानो एक दूसरे

में आभायित हो रहे है। एक दूसरे का सहयोग दे रहे है और वे मानो देखो, एक सूत्र में सब सूत्रित हो रहे है। वह सूत्र ही मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म माना गया है। वे परमपिता परमात्मा माने गएं है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हे विशेष विवेचना देने नही आया हूँ, इस सम्बन्ध में। आओ, आज हम बेटा! देखो, तुम्हे तपस्या के सम्बन्ध में, बहुत-सी चर्चाएँ होती रहती है परम्परागतो से बेटा! मानो तपस्वी, अपने में, तपो में मानो सदैव तत्पर रहते है और मुनिवरों! नाना प्रकार की आभा में आभायित रहे है। परन्तु जब ये चिन्तन और मनन का एक विषय बन जाता है कि वे परमपिता परमात्मा अनन्त और विश्वस्तर मानो देखो, उसी में रत्त रहते है। तो मुनिवरों! देखो, इसी आभा को लेकर मैने बहुत पुरातन काल में तुम्हे यह निर्णय देते हुए कहा था कि यह संसार अपनी, अपनी स्थलियां में मानो अपनी, अपनी आभा में आभायित हो रहा है, गतिवान हो रहा है। इसीलिए मानव को भी देखो, जानते, जानते अपने में आत्मवान् बनना चाहिए। मैं आत्मवान् की चर्चा कई समय से बेटा! देखो, हम उद्गीत रूपो में गाते रहते हैं और विचारते रहते है कि ऋषि, मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके मानो एक, एक वेदमन्त्र के ऊपर अनुसंधान अथवा अन्वेषण करते रहे है।

महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ संवाद

तो मेरे प्यारे! देखो, आओ मैं तुम्हे उस काल में ले जाना चाहता हूँ, जिस काल में बेटा! देखो, महर्षि विश्वामित्र अपनी उपाधि को प्राप्त हो गए थे। उपाधिवत् बन करके मानो देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, माता अरून्धती मेरे पुत्रो! देखो, जब यहाँ धनुर्याग की विवेचनाएँ होती, तो मुनिवरों! देखो, महर्षि विश्वामित्र अस्सुतं ब्रह्माः जब ब्रह्म उपाधिवादी को प्राप्त हो गए तो मेरे प्यारे! देखो, वे नम्र बन गए। चरणों में ओत-प्रोत हो गए ऋषि के, तो उस समय बेटा! ब्रह्मणां ब्रहे मानो उसके पूर्व जब वे ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए तत्पर हुए तो माता अरून्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज, अपने चन्द्रमा की मानो आभा में मानो रत्त हो रहे थे। माता अरून्धती यह उद्गीत गा रही थी कि हे प्रभु! ये

चन्द्रमा अपनी कितनी सम्पन्न कलाओं से युक्त है। मानो ये चन्द्रमा अपना प्रकाश दे रहा है, और यही चन्द्रमा मानो ब्रह्मे व्रतम् ये इसका समुद्रों से समन्वय रहता है। हे प्रभु! कितना प्रकाशमयी है।

महर्षि विश्वामित्र को राजर्षि का सम्बोधन

तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज मानो उस समय, उसी दिवस महर्षि विश्वामित्र को राजर्षि उच्चारण कर गए और उन्होने महर्षि विश्वामित्र ने अपने मन में यह निश्चय कर लिया कि आज मैं इस ब्रह्मवेत्ता को मृत्युदण्ड दूँगा। ये मानो देखो, अपने में अभिमानी है। वह एक वाटिका में निहित हो गए थे, कि जब ये निद्रा की गोद में जाएँगे तो मैं इन्हे मृत्यु दण्ड दूँगा। मेरे प्यारे! देखो, वह शांत थे।

महर्षि विश्वामित्र की तपस्या का प्रकाश

परन्तु महर्षि वशिष्ठ और माता अरून्धती का विचार-विनिमय हो रहा था, तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने यह कहा कि हे देवी! यह जो चन्द्रमा का मानो ऋषि व्रत्तं ब्रह्माः ये जो प्रकाश है यह महर्षि विश्वामित्र की तपस्या के आगे मानो ये प्रकाश कोई प्रकाश नही है। मानो यदि सहस्त्र चन्द्रमा भी प्रकाश वाले आ जाए इस प्रकार के परन्तु महर्षि विश्वामित्र के तप के आगे वह न होने के समान है। उनके तपां का प्रकाश इतना अद्वितीय है, इतना महान है कि वे प्रकाश में रत्त हो रहे है।

नम्रता से प्रभु का द्वार

मेरे प्यारे! देखो, माता अरून्धती बोली-हे प्रभु! आप बडे विचित्रतम् है। मानो जो आपको अशुद्ध वाक् उच्चारण करते रहते है आप उनकी प्रशंसा कर रहे है। उन्होने कहा-देवी! मैं उनके अवगुणों की प्रशंसा नही कर रहा हूँ, ँ गुणों की प्रशंसा कर रहा हूँ। प्रत्येक मानव का ये कर्तव्य है, कि वह दूसरों के गुणो को अपने में ग्रहण करते रहे और जो मानो अशुद्धं ब्रह्मा व्रतो देवाः मानो जो इस प्रकार का नृतः वृहस्सुति जो व्रत होता रहता है। मानो देखो, इसकी हमे अवहेलना करनी चाहिए। अव्रत की अवहेलना है और व्रत का पालन करना है। तो हे देवी! उनका जो व्रत है, तपस्या का जो अनुष्ठान है, मैं

उसकी प्रशंसा कर रहा हूँ। परन्तु मैं उनके अवगुणां की प्रशंसा नही कर रहा हूँ। क्योंकि उनमें अवगुण है वे नम्रता नहीं ला सके अब तक। क्योंकि मानव तपस्या करता रहता है, इद्रियों को संयम में लाता रहता है। परन्तु इद्रियों को संयम में लाने के पश्चात भी यदि उसमें नम्रता नही होती तो वह प्रभु के द्वार पर नही जा पाता। क्योंकि वह जो प्रभु है वह नम्र है, वह निरभिमानी है। मानो देखो, जो साधक अपने में अभिमान करता है। वह भी प्रभु के द्वार पर नहीं जा सकता देवी! क्योंकि वे परमपिता परमात्मा निरभिमानी है इसलिए जो भी साधक जन है। वे निरभिमानी बन करके प्रभु के समीप जाएँ।

ब्रह्मवेत्ता

तो महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले-देवी! दिव्या से! मैं यह वर्णन करता रहता हूँ। सदैव हमारा ये एक व्रत रहा है क्योंकि हम ब्रह्मवेत्ता कहलाते हैं। हमें मानो प्रभा मानो देखो, बुद्धिजीवी प्राणी हमें ब्रह्मवेत्ता कहते है। ब्रह्मवेत्ता वह होता है जो मानो देखो, ब्रह्म जैसे गुणों को मानो देखो, उसकी प्रतिभा में वो रत्त हो जाए। मेरे प्यारे! देखो, रात्रि छाई हुई है, परन्तु देखो, अन्धकार स्थली पर एक साधक अपनी स्थली पर विद्यमान रहता है। परन्तु वह तारामण्डलों को गणना में ला रहा है और उन तारामण्डलों को गणना में लाता हुआ, उनकी आभा में आभायित हो रहा है। तो मानो देखो, ब्रह्म की रचना को, अपने में ध्यानावस्थित हो रहा है। क्योंकि ब्रह्म की रचना इतनी विचित्र है कि उसकी आभा में सदैव रत्त रहता है।

जीवन में तप

मेरे प्यारे! देखो, वह साधक कहलाता है। इसीलिए कोई भी मानव, संसार में बह्मवेत्ता बनना चाहता है तो नम्रता की आवश्यकता है। क्योंकि परमपिता नम्र है। परमपिता परमात्मा सृष्टि की रचना में मानों वो रचनाकार है। रचना करके उसकी पालना कर रहे है। तो वह रचना भी कर रहे हैं, पालना भी हो रही है तो इसीलिए वो नम्र है। इसीलिए मानव को अपने जीवन में, तपों की रचना में रचित हो जाना चाहिए। परन्तु तपस्या तो मानो देखो, जब उसमें, नम्रता का विधान हो जाएगा तो वह मानव ब्रह्म के

समीप पहुँचने का प्रयास करता रहता है।

चन्द्रमा का प्रकाश

तो आओ, मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने माता अरून्धती से कहा कि हे दिव्या! तुम्हे यह प्रतीत हो गया, मैं उच्चारण कर रहा हूँ कि ये चन्द्रमा मानो प्रकाश दे रहा है। पूर्णिमा का चन्द्रमा है जो सम्पन्न कलाओं से युक्त है। ये समुद्रों से मानो देखो, अमृत को ग्रहण करता है। उसी अमृत को बिखेरता रहता है। वो जगत में देता रहता है। जो पृथ्वी के गर्भ में, वसुन्धरा के गर्भ में जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ तप रहा हैं मानो देखो, ये अमृत बना रहा है। जैसे वनस्पतियाँ है, नाना प्रकार की वनस्पतियों में यह रस प्रदान कर रहा है, अमृत दे रहा है। उसी अमृत से मानो देखो, ऊर्घ्व गतियों में प्राप्त होते रहते है।

महर्षि विश्वामित्र में नम्रता की सूक्ष्मता

तो मेरे प्यारे! देखो, जब माता अरून्धती से महर्षि वशिष्ठ मुनि ने यह कहा कि हे देवी! इसी प्रकार ब्रह्मणां ब्रह्मे कृतं ऋषि वरूणाः मानो ये जो ऋषि है, ब्रह्मवेत्ता बनने में सूक्ष्मता है क्योंकि नम्रता की सूक्ष्मता है। देखो, ज्ञान अपार है। जितना ज्ञान होना चाहिए वो ज्ञान भी है, अन्तःकरण भी पवित्र हो गया है, प्रकाश में चला गया इन्दियों ने अपने-अपने विषयां को, इद्रियों के विषयों को जान गया है कि नेत्रों का क्या विषय है, घ्राण का क्या विषय है मानो श्रोत्रों का क्या विषय है सब देवता, और उपदेवताओं को जानने वाले ये बन गए है, परन्तु नम्रता की सूक्ष्मता है।

मेरे प्यारे! देखो, माता अरून्धती बोली कि-प्रभु! ये मैं बडी विचित्र आपसे गाथा श्रवण कर रही हूँ मानो आप इतने उदार है, इतने महान है। कि मानो देखो, वे कितने आपको अशुद्धता में परिणत करते रहते है। उन्होने कहा-देवी! यही तो नम्रता का एक सूचक कहलाया गया है। यदि नम्रता आ जाती तो वह अशुद्ध, देखो, अरूणावलियों में प्राप्त हो जाते तो मानो वह अपनी वाणी से अशुद्ध उच्चारण नही कर पा सकते थे।

महर्षि वशिष्ठ द्वारा महर्षि विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि सम्बोधन

तो मेरे प्यारे! देखो, जब महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज यह उच्चारण कर रहे थे तो वाटिका में विद्यमान होने वाले, विश्वामित्र अपने में यह विचार रहे थे कि तू कितना पामर है, तू कितना धूर्त है। मानो देखो, एक ऋषि को तू नष्ट करना चाहता है और ऋषि के उद्गार कितने पवित्र है। मानो देखो, वह हृदयग्राही है। मेरे प्यारे! देखो, अश्रुपात हो रहे है। वे वाटिका में विद्यमान हुए, ऋषि के अश्रुपात हो रहे है और अश्रुपात होकर के बेटा! अपनी वाटिका को उसने त्याग दिया और त्याग करके मुनिवरों! देखो, वे वशिष्ठ मुनि महाराज के चरणों में ओत प्रोत हो गए और ये कहा-कि प्रभु! मुझे क्षमा कर दीजिए, मैं बडा पामर हूँ।

उन्होने कहा-आइए, ब्रह्मर्षि जी! पधारिए। मेरे प्यारे! उन्होंने ब्रह्मर्षि जैसे ही उच्चारण किया मेरे प्यारे! उन्होने कहा-ऋषि! अब तुममें नम्रता आ गई है। देखो, तुम्हारा जो जीवन है वो अब नम्र होकर के प्रभु के समीप, ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए तत्पर हो गए।

आत्मा और ब्रह्म की प्रेरणा

तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने जब ये कहा-तो रात्रि का काल था। उन्होने कहा-हे ब्रह्मवेत्ता। जाओ, तुम अब विश्राम करो। मेरे प्यारे! महर्षि विश्वामित्र ने ऋषि की आज्ञा पाकर के अपने कक्ष में जा पहुचे, जहाँ उनके विश्राम का गृह था। मेरे पुत्रो! देखो, माता अरून्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज वार्त्ता प्रारम्भ करते रहे। उन्होने कहा-हे भगवन्! आज तो आपके चरणों की पादुका मानो उनके मस्तिष्क के द्वारा स्तुति, तो उन्होने कहा-हे देवी! यही तो मानो देखो, नम्रता का एक अव्रत गुण कहलाता है कि एक मानव, एक स्थली पर मानो दैत्य बना हुआ है दूसरे क्षण जब आत्मा और ब्रह्म की प्रेरणा होती है तो वही देवतव को प्राप्त होता रहता है। तो हे देवी! वो देवता बन गए है। वो देवतव को प्राप्त हो गए है। वो ब्रह्म के निकटतम मानो जाने के लिए तत्पर होने लगे है।

अनन्तमयी जगत की विचित्रता

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने जब यह कहा तो मुनिवरों! उन्होंने

कहा-प्रभु! आप तो धन्य है। आपकी वाणी, आपकी जो विचार शक्ति है वो बडी विचित्र है। वो बड़ी नम्र है मानो देखो, एक ऋषि के अन्तर्हृदय को कितना विश्वसनीय बना दिया है। मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा-हे देवी! ये जो प्रभु का अनन्तमयी जगत तुम्हे दृष्टिपात आ रहा है इस जगत में प्रायः ऐसा ही होता है। मानो एक दूसरे में, एक दूसरा पिरोया हुआ है। एक दूसरा एक दूसरे को प्रेरणा दे रहा है और वह प्रेरित हो करके, अपने दुर्गुणों को त्याग करके वह गुणग्राही बन जाता है। हे देवी! आज जब हम यह विचारते है कि एक दूसरा सहायक है। जैसे तुम चन्द्रमा की वार्त्ता उच्चारण कर रही हो इस चन्द्रमा का जो समन्वय है, वह सूर्य से रहता है। सूर्य इसे ऊर्ज्वा देता है। इसे मानो महानता देता है। परमपिता परमात्मा की मानो ऐसी विचित्र रचना है कि इसी का समन्वय मानो देखो, अपने में शीतलता को प्राप्त करके, यह जल को अपनें में ग्रहण करता हैं और यही अमृत बना करके मानो वृष्टि रूप में परिणत करता है। ये रात्रि समय मानो देखो, उस अमृत को बिखेरते रहते है। माता के गर्भस्थल में क्या मानो पृथ्वी के गर्भस्थल में क्या, प्रत्येक मानो देखो, वनस्पतियो के गर्भ में जो भी वस्तु पनप रही है सब में मानो देखो, अमृत को बहाने वाला यह चन्द्रमा है।

परमात्मा की आभा

दिव्या से! तुम्हे यह प्रतीत है। कि मानो देखो, माता के गर्भस्थल में जब हम, जैसे शिशु मानो विद्यमान होते है तो यही देवता, ऐसा चन्द्रमा है, जो अमृत को देने वाला है। अमृत को बहाता रहता है। मानो देखो, माता की रसना के निचले विभाग में, एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी है। उस नाड़ी का समन्वय, माता की पुरातत वरिष्ठ नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत नाम की नाडी का सम्बन्ध एक मृचिका नाम की नाड़ी होती है, उस से होता है और उस नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से होता है। वहाँ उस नाड़ी की पञ्च धाराएँ बनती है और पञ्च धारा बनकर के माता की नाभि में उन पांच नाड़ियों का समन्वय हो करके और जो बाल्य माता के गर्भ में पनप रहा है मानो देखो, उस की नाभि का और माता की नाभि का समन्वय होकर के बेटा! अमृत को बहाया

जा रहा है। वाह रे, मेरे प्रभु, तू कितना विज्ञानवेत्ता है। जब हम बेटा! इस विज्ञान की विवेचना में प्रवेश करते है तो मानो एक आभा, द्वितीय आभा वे इतनी अगणित हो जाती है कि हम गणना में नही ला सकते।

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या देखो, यह चन्द्रमा मानो सहायता कहाँ से लेता है? सूर्य से। मानो सूर्य कहाँ से सहायता लेता है? बेटा! ये द्यौ से लेता है। ये द्यौ से सहायता लेकर के, ये मानो देखो, तेजोमयी बिखेर रहा है। ये सूर्य मुनिवरों! देखो, ऊर्ज्वा दे रहा है और उस ऊर्ज्वा को ये प्राणी मात्र अपनें में पान करता हुआ बेटा! अपनें में महान बन रहा है, विचित्र बन रहा है। जिसके ऊपर हमारे ऋषि, मुनि मानो देखो, नाना प्रकार का अन्वेषण, अनुसन्धान करते रहे है।

वशिष्ठ और अरुणधती मण्डलों का प्रभाव

तो मेरे प्यारे! विशेष विवेचना न देता हुआ, क्या माता अरून्धती और महर्षि वशिष्ठ मुनि के ये विचार-विनिमय हो रहे थे मानो देखो, उन्होंने कहा-प्रभु! माता अरून्धती बोली-कि प्रभु! मैं जानना चाहती हूँ कि मानो देखो, जैसे यह अरून्धती मण्डल और देखो, यह वशिष्ठ मण्डल कहलाता है। मानो देखो, दोनों का परस्पर क्या समन्वय रहता है? उन्होंने कहा-हे दिव्यासे! ये मानो देखो, एक वशिष्ठ मण्डल है और एक अरून्धती मण्डल कहलाता है। मानो देखो, ये दोनो मण्डल है। देखो, वास्तव में किस आभा में तुम जानना चाहते हो, मैं उस रूप को नही जान सका हूँ। उन्होंने कहा-हे प्रभु! सबसे प्रथम, मैं जब आचार्य के द्वारा अध्ययन करती थी तो मानो देखो, एक पोथी का निर्माण, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने किया था और उस सूक्ष्म-सी पोथी में मैंने यह अध्ययन किया था कि जितने मण्डलों का, जो धारा रूप में प्रकाश होता है वह माता के गर्भस्थल से उसका विशेषकर होता है। मानो देखो, मैं सबसे प्रथम तो यह जानना चाहती हूँ कि मानव के जीवन में, बाल्य के जीवन की रचना से इसका क्या समन्वय रहता है?

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे देवी! मैंने भी कुछ वेद मन्त्रों का

अध्ययन किया। जिसके ऊपर मनन भी किया है। ऐसा मुझे प्रतीत है, ऐसा मुझे कुछ भान हुआ है कि वशिष्ठ और देखो, अरून्धती दोनों जो मण्डल है अरून्धती कहते है, जो बुद्धि का सूचक है। वशिष्ठ कहते है जो मानो देखो, बुद्धि में वरिष्ठ होता है उसका नाम वशिष्ठ कहलाता है। इसलिए दोनो का परस्पर जो समन्वय है मानो देखो, उसकी जो तरंगे चलती है, धाराएँ चलती है, मण्डलों की। माता के गर्भस्थल में क्या, मानो देखो, माता के ब्रह्मरन्ध्र में एक नाड़ी होती है। उस नाड़ी का नाम वृत्तिका कहते है। वृत्तिका नाड़ी का समन्वय, माता की रीढ़ से होता है और रीढ़ से समन्वय होकर के जब वह मानो देखो, त्रिवर्धा से मानो देखो, उस नाड़ी से, एक नाड़ी मानो पुनः ब्रह्मरन्ध्र को, मस्तिष्क को गमन करती है और वह गमन करके, माता की रसना के और मानो देखो, तुरिता के, दोनो के मध्यम में उस नाड़ी का समन्वय होकर के मानो देखो, वह धराएँ आ रही हैं और जब माता के गर्भस्थल में हम जैसे शिशु मानो देखो, अष्ट माह के होते है तो उस समय उनकी धराओं का, माता के मस्तिष्क से, बाल्य के मस्तिष्क का हम जैसे शिशुओं के मस्तिष्क का परस्पर जब समन्वय होता है तो उसकी धराओं से देखो, एक वशिष्ठ नाम की बुद्धि का, विशेष प्रकार से उसका निर्माण होता है। मानो देखो, उसका विच्छेद वृत्तिकाओं से रहता है।

अष्ट माह का गर्भ

तो ऐसा हमारे यहाँ कुछ अनुभव आया है। विचारा गया है कि अष्ट माह का गर्भ यदि माता के गर्भ से पृथक् हो जाए तो देखो, वो प्राणवर्धक नहीं होता। मानो देखो, उसका विच्छेद हो जाता है। शरीर और आत्मा दोनो का विच्छेद होकर के शून्यता को प्राप्त हो जाता है। हा, सप्त माह का विच्छेद नही हो पाता यह बडी विचित्रता है प्रभु की रचना की, मानो देखो, इस विचार में मैं तुम्हे ले जाना नही चाहता हूँ। विचार केवल यह है कि मुनिवरों! देखो, विचारं व्रहे वृतम मानो देखो, देवत्तम् देखो, जब यह विचार में आ गया, माता अरून्धती ने यह स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा देवत्तम् मानो आचार्य के कुल में जब मैं अध्ययन करती थी तो मानो देखो, माता सुलेलता मुझे यह वर्णन

कराती रहती थी। महर्षि तत्त्व मुनि महाराज की विद्या से ऋषि पत्नी मुझे यह वर्णन कराती रहती थी और यह आपने भी मुझे उसी प्रकार का उत्तर दिया तो आपको धन्य है।

विश्वामित्र का अभिप्राय

तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि से इस प्रकार विचार-विनिमय होने लगा, तो बेटा! उन्हे इसी विचार में प्रातः काल हो गया। प्रातः काल होते ही मेरे पुत्रो! अपनी क्रियाओं से निवृत्त हुए और निवृत्त होकर के मानो देखो, यज्ञशाला में विद्यमान हो गए। ब्रह्मचारी अपनी क्रियाओं से निवृत्त होकर के वह भी और मानो देखो, अपनी क्रियाओं से निवृत्त होकर, महर्षि विश्वामित्र मेरे प्यारे! देखो, ऋषि के द्वार पर आए और ऋषि के चरणों की वन्दना करते हुए बोले कि हे प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिए। जो भी आप मुझे आज्ञा देंगे उन्हीं क्रियाकलापों में परिणत हो जाऊगा। मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले कि हे अप्रतं मण्डलं व्रहे हे विश्वामित्र! तुम विश्व के मित्र हो। तुम मुझे उत्तर दो कि तुम्हे ये नामोकरण किसने दिया? उन्होंने कहा-प्रभु! जब मैं अनुष्ठान कर रहा था तो मानो देखो, महर्षि प्रवाहण और महर्षि शिलक मुनि ने ये अप्रतम् मुझे उपाधि प्रदान की, कि तुम विश्वामित्र बन गए हो और विश्व के मित्र बन गए हो। उन्होंने कहा कि विश्वामित्र कौन होता है? उन्होंने कहा विश्वामित्र वो होता है जिसके क्रियाकलापों में इतनी नम्रता, इतना विवेक हो मानो उसका कार्य इतना विचित्र हो कि वह सर्वत्रता में मित्रता का व्यवहार करे। तो वह विश्वामित्र कहलाता है।

मेरे प्यारे! उन्होंने पुनः कहा कि हे ब्रह्मचारी! हे वृतम् मानो देखो, ये विश्वामित्र कौन होता है? ऋषि ने कहा-हे प्रभु! वास्तव में तो विश्वामित्र प्रभु ही है क्योंकि जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड का मित्र है ऐसा ही प्रकाश मानो देखो, अवृतो में परिणत करते रहते। ऐसा ही पृथ्वी में, ऐसा ही मंगल में, ऐसा ही चन्द्रमा में जो एक रसवत् हो वही मानो देखो, विश्व का मित्र कहा जाता है। वास्तव में मैं ये स्वीकार कर गया हूँ। परन्तु रहा ये, कि मुझे विश्वामित्र स्वीकार किया गया, तो मैं प्रभु की आभा में रत्त होना चाहता हूँ। प्रभु!

अपने को, इस संसार से मानो त्रिर्वधा में परिणत करता हुआ, प्रभु के समीप जाना चाहता हूँ। और जो प्रभु के समीप जाता है वो मानो देखो, अपनी अपनी जो इंद्रिया है जो इंद्रियाँ मानो देखो, पाप से बिंधी है वे भी पुण्य से परिणत होती हुइ ज्ञान और विज्ञान से पिरोई मानो देखो, वहाँ विश्व की मित्रता की वार्त्ता आ जाती है।

आत्मा का मित्र

मेरे प्यारे! उन्होने यह स्वीकार कर लिया। माता अरून्धती बोली-कि हे विश्वामित्र! मानो अब तुम ब्रह्मचारी हो या मानो देखो, तुम विश्वसनीय, विचित्र बन गए हो। तो मेरे प्यारे! उन्होने कहा-हे दिव्यासे! मैं आपके लिए तो मानो समय का वृत हूँ और परमपिता परमात्मा की आभा में, और उसके राष्ट्र में विद्यमान हूँ। परन्तु देखो, मैं ज्ञान का जिज्ञासु हूँ और विवेक में मैं मानो देखो, परिणत होना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा धन्यं ब्रहे वासवं बृहि व्रतम् कि हे विश्वामित्र! तुम्हे संसार के लिए, मानो जिस संसार में तुम रहते हो, उसमें तुम्हे विश्वामित्र कहते है। तुम विश्व के मित्र कैसे हो? उन्होंने कहा-हे माता! मेरे शरीर में जो पञ्चमहाभौतिक मानो पिण्ड रूप में क्रियाकलाप हो रहे है वे मेरे संचार रूप से चलते हैं। तो मानो देखो, मैं ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहता हुआ, उसी में रत्त रहकर, मैं विश्व की कल्पना कर सकता हूँ। मैं वास्तव में विश्व का मित्र नही हूँ। क्योंकि मैं अन्तरात्मा का मित्र बन गया हूँ तो मानो देखो, मैं विश्व का मित्र बन गया हूँ। मैं आपकी कृपा आनन्द से मैं मानो देखो, मैं आत्मा का मित्र बनना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, यह विचार आता है कि आत्मा का मित्र कौन होता है? आज के हमारे वैदिक साहित्य में मानो देखो, आत्मा की चर्चा आ रही थी। आत्मा की विवेचना आ रही थी। तो बेटा! देखो, आत्मा ब्रहे मानव! को देखो, जब आत्मा ब्रह्मे व्रतम् जब आत्मा को जानने के लिए तत्पर होता है। तो मेरे प्यारे! वो संसार से ओझल हो जाता है। वे संसार से दूरी हो जाता है। एकोकी चरणा रहता है। कि आत्मवान बनकर के मैं प्रभु के समीप जाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, जब प्रभु के हृदय, से मेरे हृदय का समन्वय

हो जाएगा तो मैं मानो देखो, विश्वामित्र के कुछ प्रकाश में मानो अपने अन्तःकरण को पवित्र बना सकूंगा जिससे मैं मानो निर्द्वन्द्व होकर के इस संसार की नाना प्रकार की आभाओं से परिणत होना चाहता।

राष्ट्र के प्रति कर्तव्य

मेरे प्यारे! माता अरून्धती के प्रश्नों का उत्तर यथावत् उन्होंने दिया तो उन्होंने व्रतम् मेरे प्यारे! देखो, पुनः विश्वामित्र ने आज्ञा पाई कि भगवन्! हे वशिष्टो ब्रम्ये दिव्या! मुझे आज्ञा दीजिए, मेरे लिए कोई आज्ञा हो तो मुझे उद्गीत रूप में गाइये।

मेरे प्यारे! महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने कहा हे भगवन्! हे विश्वामित्र! मैं तुम्हारे गुणों को जानता हूँ। तुमने अपने जीवन में जितना अध्ययन किया है, जितना क्रियाकलाप किया है, मैं उसको जानता हूँ। मानो देखो, तुम धनुर्विद्या में बड़े पारायण हो, मेरी इच्छा यह है कि तुम मानो देखो, दण्डक वन में चले जाओं और धनुर्याग की रचना करो और धनुर्याग को मानो देखो, अपने में क्रियात्मक लाना प्रारम्भ करो। जिससे देखो, हमारा सबसे प्रथम कर्तव्य है कि जिस राष्ट्र में हम गमन करते है, जिस राष्ट्र में हम मानो देखो, वायु सेवन करते है और जिस राष्ट्र का अन्न इत्यादि ग्रहण करते है, जल इत्यादि पान करते है तो मानो सबसे प्रथम उस राष्ट्र के लिए, कोई ना कोई मानो ऐसा क्रियात्मक, क्रियाकलाप करना चाहिए जिस क्रियाकलाप से राजा के राष्ट्र में कोई ना कोई, गुण प्रहे व्रतः देखो, अर्पित कर दें। जिससे राजा के राष्ट में एक महानता की ज्योति जागरूक हो जाए।

मेरे पुत्रो! देखो, विश्वामित्र ने यह स्वीकार कर लिया। उन्होंने कहा-प्रभु! मुझे राजकुमार चाहिए। मुझे मानो देखो, युवक, ब्रह्मचारी चाहिए जिसे मैं धनुर्विद्या प्रदान कर सकूँ। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा तो सबसे प्रथम मानो देखो, तुम दण्डक वनों में एक रचना रचो। उसके पश्चात मानो देखो, हमारे विद्यालय में भी ब्रह्मचारियों को इस प्रकार की शिक्षा होनी चाहिए मानो देखो, इनके यहाँ भी एक धनुर्विद्या की रचना अवृत होनी चाहिए।

याग के प्रकार

हमारे यहाँ जहाँ नाना प्रकार की विद्याओं का वर्णन आता रहता है जैसे हमारे यहाँ देखो, कर्मकाण्ड की पद्धतियों में याग का वर्णन आता है और याग भी कई प्रकार के माने गए है जैसे अश्वमेध याग है, अजामेघ याग है, गोमेघ याग है। मानो देखो, वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है, वृत्तिका याग है, ब्रह्मयाग है, रूद्र याग है, विष्णु याग है, देवी याग है, कन्या याग है और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन आता रहता है। परन्तु देखो, यह वैदिक साहित्य की तो हमें देन है और इसका वर्णन करते हुए नाना ऋषि मुनियों ने इसका बड़ा वर्णन किया है। यहाँ गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज ने ८५ प्रकार के यागों को जानने का प्रयास किया। जो की वैदिक साहित्य से प्राप्त हुआ।

मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार की आभा में रत्त होकर के अपने में अपनेपन की आभा में सदैव हमें रत्त रहना चाहिए। मेरे प्यारे! उन्होंने ब्रह्मं व्रहते ये धनुर्याग भी एक याग कहलाता है। जहाँ ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन करते रहे।

नम्रता में मानवीयता

तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार ऋषि ने अपना व्रत करते हुए अपनी वर्णना वृत्तियो में मेरे प्यारे! आज्ञा पाकर के वो भयंकर वनो में चले गए और वे धनुर्याग के लिए तत्पर हो गए। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या आज के हमारे वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवेत्ता बनकर के अपनें में क्रियाकलापों में तत्पर हो जाए और महानता की ज्योति में रत्त हो जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, वो महान कहलाता है। अपने में नम्रता को लाना ही मानवीयतव कहलाया गया है।

तो बेटा! आज मैं तुम्हे विशेष चर्चा तो प्रकट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह है कि हमारे यहा विश्वं ब्रह्मलोकां वाचन्नमं व्रहे मेरे प्यारे! महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज का विचार-विनिमय होता रहता था। समय समय पर बेटा! ब्रह्म की चर्चाएँ और धनुर्याग की चर्चाओं का विषय तो हम कल ही उच्चारण करेंगे। आज तो इतना समय आज्ञा नही दे रहा है। कई समय धनुर्विद्या की चर्चाएँ की है आज भी

मुनिवरों! देखो, हम धनुर्विद्या में जाना चाहते है। परन्तु देखो, अब यहाँ से याग का प्रारम्भ होगा।

मेरे प्यारे! आज का विचार क्या, मुनिवरों! देखो, ऋषि कहते है-हे मानव! तू नम्र हो करके ज्ञान और विज्ञान की प्रतिभा में रत्त होकर के, तू अपने प्रभु को जानने का प्रयास कर, अपने में आत्मवान बनकर के प्रकाशवान हो। ये है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूगा।

नम्रता में विवेक

आज के वाक् उच्चारण करने कर अभिप्रायः यह कि हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार का ज्ञान और विज्ञान, भिन्न भिन्न प्रकार की तपस्याओं का वर्णन और भिन्न भिन्न प्रकार के क्रियाकलापों का वर्णन प्रायः होता रहता है। तपस्याओं का और अनुष्ठानों का वर्णन भी होता रहा है। परन्तु जो ऋषि कहते है जब तक मानव में नम्रता नही आती, मानो ओजस्विता, विवेक नही आता तब तक मानव महान नही बनता। यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो मैं तुम्हे बेटा! शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय ये कि परमपिता परमात्मा का ये जो जगत है यह बड़ा अनूठा है। ज्ञान और विज्ञान से गुथा हुआ है। जिस भी स्थली पर जाओ, वहीं ज्ञान और विवेक तुम्हें प्राप्त हो जाएगा। ये हे बेटा! आज का वाक्, अब समय मिलेगा, शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। ओ३म् देवाः यम रथा मां गृहिता वा याः।

ओ३म् यशश्चां ग्यौः आप्यां लोकं रथाः वायुरेवाः। अच्छा दिनांक-०६-०५-१९८८-पानीपत, हरियाणा

२ यमाचार्य, नचिकेता संवाद ०७-०५-१९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस

मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता हैं। क्योंकि जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते है। क्योंकि उनकी अनुपमता और महानता सदैव एक, एक वेदमन्त्र में निहित रहती है।

हमारे यहाँ परम्परागतो से ही ऋषि, मुनि एकत्रित हो करके एक, एक वेदमन्त्र के ऊपर अनुसंधान करते रहे हैं और परमपिता परमात्मा का जो ये ज्ञान और विज्ञानमयी मानो जगत हैं इसके ऊपर वे अनुसंधान और अपने में मानो अपनेपन का भान करते रहते है। परमपिता परमात्मा को पुरोहित माना है। क्योकि जो पराविद्या का नेतृतव करने वाला है वे परमपिता परमात्मा पुरोहित के रूप में विद्यमान रहते है।

पुरोहित की उपासना

तो आओ, मुनिवरों! देखो, आज हम उस पुरोहित की उपासना और पुरोहित की महानता के ऊपर प्रायः हमारा विचार-विनिमय होता रहा है और मानव अपनी बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ता रहा है। क्योंकि परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में, सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक उनके ऊपर अन्वेषण होता रहा है, मानव मुग्ध होता रहा हैं। उसके गर्भ में प्रवेश किया है और उसके गर्भ को जन्मं बह्मे वृतं देवाः उसके गर्भाशय को जानकर के ज्ञान और विज्ञान की उड़ाने उड़ता रहा है।

तो आओ मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र बहुत ऊधर्वा में अपनी उड़ाने उड़ता रहता है। हमारे यहाँ साहित्यिक चर्चाओं में भी नाना प्रकार की उड़ाने होती रही है। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है? कि वे परमपिता परमात्मा पुरोहित है और हमारा कल्याण करने वाले है। मानो वो पराविद्या में हमें ले जाते है और उसका अवगाहन कराते रहते है। तो मुनिवरों! देखो, वे परमपिता परमात्मा अनुपम है और वे पुरोहित, जो पराविद्या में रत्त रहने वाले है।

माता की गाथा

तो मुनिवरों! आओ, आज का हमारा वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। मानो जिस प्रकार माता का पुत्र, माता की गाथा गाता रहता है। जिस प्रकार ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती रहती है। इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र बेटा! परमपिता परमात्मा का वर्णन कर रहा है अथवा उसके गुणो का गुणवादन कर रहा है। माता अपने में ममत्वं ब्रह्माः मानो देखो, उसे माता कहते है जो वसुन्धरं ब्रह्मव्रताः जो अपने गर्भस्थल में बेटा! हम जैसे पुत्रों! को बसाने वाली है। मानो देखो, माता जो ममतामयी की प्राप्ति होती है उसके गर्भ में, वो मानव ब्रहे हम जैसे शिशु विद्यमान रहते है।

तो माता की गाथा कौन गा रहा है। मानो पुत्र ही तो उसकी गाथा गाता है अथवा उसका वर्णन करता है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक जब मानव यह अन्वेषण करने लगा, कि ये पृथ्वी, जो ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है अथवा ब्रह्माण्ड का वर्णन कर रही है। जब भी जिस भी काल में विज्ञान पनपा है उसमें गुरूतव परमाणु के ऊपर अन्वेषण किया है और उसकी उड़ान उड़ता हुआ वह कितनी उधर्वा में गति करने लगा है। मानो अणु और परमाणुओं को लेकर के यह लोक लोकान्तरां की यात्रा में रत्त हो गया है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ये पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गाती है। परमात्मा का अनूठा ब्रह्माण्ड है और उसकी गाथा गाने वाला मानो देखो, अपनी वृत्तियों में रत्त हो करके ही उसका गुणगान गाया जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज मैं तुम्हे यह वर्णन कराने के लिए, कि हमारे यहाँ नाना ऋषियों के गोत्र हुए है और उन गोत्रों में मानो अपने क्रियाकलाप बड़े विचित्रता से होते रहें है। आज का बेटा! एक वेदमन्त्र उद्गीत रूपों से ऐसा गा रहा है कि मानो अपने में उद्गीत गाता रहता हुआ अपनें में अपनेपन को दृष्टिपात करता रहा।

उद्दालक गोत्र के ऋषि

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हे मानो देखो, ऋषियों के आसन पर ले जाना चाहता हूँ। हमारे यहाँ नाना वंशलज हुए है जैसे हमारे यहाँ उद्दालक गोत्र हुआ है और उद्दालक

गोत्र के जो ऋषि हुए है वे बडे विचित्रतम, महानता में सदैव गति करते रहें है।

तो आओ, मुनिवरों! आज मैं तुम्हे उद्दालक गोत्र में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ बेटा! देखो, विश्वश्रवा की चर्चा आती है। मुनिवरों! देखो, उद्दालक गोत्र में बहुत से वंशलज हुए है। मेरे प्यारे! देखो, उसी में शिकामकेतु उद्दालक हुए हैं जिन्होने बेटा! विज्ञान के माधयम से, शब्दों के आकार और शब्दों में जो क्रियाकलाप होते रहे है। मानो उनको दृष्टिपात करते रहे।

मोक्ष-जिज्ञासा

आओ, मेरे पुत्रो! मैं उन क्षेत्र में नही ले जाना चाहता हूँ। केवल यह कि महाराजा! विश्वश्रवा एक समय बेटा! अपने आसन पर विद्यमान थे और आसन पर विद्यमान होकर के उनके मन में यह जिज्ञासा जागरूक हुई कि मैं मोक्ष को जाना चाहता हूँ। अब मुझे मोक्ष कैसे प्राप्त होगा? मैं परमात्मा को किस प्रकार मानो उसकी लोरियों का पान कर सकूँगा? जैसे माता का पुत्र क्षुधा से पीड़ित हो रहा है। परन्तु माता अपनी आनन्दमयी लोरियों से उसकी क्षुधा को शांत कर देती है। उसी प्रकार मानो यह विचारने लगे, महात्मा ने यह विचारा कि मैं अपने को मोक्ष का गामी बनाना चाहता हूँ। अब ये मुझे कैसे प्राप्त हो, आनन्द कैसे प्राप्त हो?

महाराज विश्वश्रवा का सर्व द्रव्य से याग

मेरे प्यारे! देखो, इसी चिन्तन में वह अपने मनोनीत में, चिन्तन व्रतं ब्रह्माः वे मनन और चिन्तन कर रहे थे। अपने में यह विचार रहे थे कि यह कैसे मुझे प्राप्त हो? मेरे प्यारे! कही से महर्षि विभाण्डक भ्रमण करते हुए ऋषि के आसन पर विद्यमान हो गए और उन्होने कहा-प्रभु! क्या चिन्तन कर रहे हो? उन्होने कहा-प्रभु! मेरी इच्छा ऐसी है कि मैं मोक्ष के लिए तत्पर ब्रहे, मैं मोक्ष को जाना चाहता हूँ। अब मैं यह विचार रहा हूँ कि ऐसा कौन-सा क्रियाकलाप है जिस क्रियाकलाप के द्वारा मैं प्रभु को प्राप्त कर सकूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होने ये विचारा, कि भगवन्! मेरा विचार यह आया है कि जब तक मैं द्रव्यपति, द्रव्य मेरे समीप है मानो मैं परमपिता परमात्मा की प्रतिभा में रत्त नही हो

सकता। इसीलिए मेरी इच्छा यह कि सर्व द्रव्य का याग कर दिया जाए।

तो महर्षि विभाण्डक मुनि ने कहा-प्रभु! यह वाक् तो आप का बहुत प्रियतम है। क्योंकि याग एक ऐसा कर्म है, ऐसा एक क्रियाकलाप है जिससे मानव की प्रवत्तियाँ, मानव के शब्द मानो सब द्यौ लोक में प्रवेश कर जाएँ मानो देखो, चित्राव्रणः व्रते।

तो महर्षि विभाण्डक ने कहा-प्रभु! एक समय हम महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में गए और महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में हमने एक याग किया था और वह यागं ब्रह्मे उन्होने वैज्ञानिक यन्त्रों का मानो निर्माण किया था। जिस निर्माणं ब्रह्मे जैसे हम स्वाहा उच्चारण करते थे। उसके शब्द मानो देखो, यंत्रो में हमें दृष्टिपात आते रहे। जिस शब्द ने हमारे यंत्र में प्रवेश किया, वह द्यौ-लोक को जा रहा था। यह हमने अपने में मानो गमन किया है, प्रभु! अब हमारी इच्छा यह कि आपका जो याग है वो सम्पन्न होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वश्रवा ने यह विचार लिया कि मैं याग करूगाँ और जितनी सम्पदा है उस सर्व सम्पदा को मैं याग में समर्पित करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, यह निश्चय हो गया। मुनिवरों! देखो, उनके यहाँ बहुत-सी गऊएँ थी, बहुत-सा द्रव्य था। उन सर्वत्र का मानो देखो, एक याग का उन्होने नृत्त किया। महर्षि विभाण्डक और महर्षि भिण्डीरेति मुनि महाराज भी देखो, उस आश्रम में विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होने नाना ऋषियो मुनियों को निमंत्रित किया और निमंत्रित करने के पश्चात उन्होंने यज्ञशाला का निर्माण किया।

याग का निर्वाचन

यज्ञशाला का निर्माण हो गया। तो मुनिवरों! देखो, महर्षि विश्वश्रवा याज्ञिक बनकर के, यज्ञमान बनकर के मानो देखो, निर्वाचन करने लगे। सबसे प्रथम उन्होने ब्रह्मा का निर्वाचन किया। मेरे प्यारे! महर्षि विभाण्डक मुनि उस याग के ब्रह्मत्व को प्राप्त हुए और महर्षि भिण्डी मुनि महाराज बेटा! उसके मानो देखो, वह उद्गाता के रूप में परिणत हो गए और मेरे प्यारे! देखो, महर्षि स्वाति मुनि महाराज को उस याग का अध्वर्यु नियुक्त किया मानो देखो, याग का जब प्रारम्भ होने लगा तो बेटा! देखो, याग वरणं बह्मे कृतं

यज्ञं भवितं ब्रह्मेः मानो देखो, याग अपने में ब्रह्मत्व को प्राप्त होने लगा। बेटा! याग तो अपने में अद्वितीय क्रियाकलाप है। हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक बेटा! देखो, याग का अपने में बडा महत्त्व माना गया है। याग अपने में अनूठा है। क्योंकि सृष्टि के गर्भ से इसकी निर्माण वृत्तियों को उन्होने धारयामि बनाया है।

ब्रह्माण्ड रूपी याग

जिस प्रकार बेटा! देखो, यज्ञ, यह ब्रह्माण्ड जो हमें दृष्टिपात आ रहा है यह भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। इसी यज्ञशाला में बेटा! देखो, जब सृष्टि के वृणां ब्रह्मा जब इसकी रचना होती है तो मानो देखो, ब्रह्मा स्वतः अपने में ब्रह्मणां ब्रह्मे देखो, परमात्मा ब्रह्मा बनते हैं। आत्मा, यज्ञमान बनता है। पञ्च महाभौतिक सब ऋत्विज बनकर के एक अनूठा याग प्रारम्भ हो जाता है। मेरे प्यारे! इसी क्रम को उन्होने बाह्य जगत में लिया। बाह्य जगत में भी देखो, इसी प्रकार का नृत्त मानो उसके क्रियाकलापों की, कर्मकांड की विशुद्ध पद्धति को अपना करके बेटा! उसी प्रकार का उन्होने नृत्त करना प्रारम्भ किया।

उपयोगी दान

याग जब प्रारम्भ हो गया तो मेरे प्यारे! देखो, अपने-अपने उपदेशों से एक दूसरे में अपने-अपने वेदो का गान गाते हुए, वेद प्रमाणां ब्रहे वे वेद के मन्त्रों के द्वारा याग प्रारम्भ होने लगा। मेरे प्यारे! याग प्रारम्भ होता रहा, परन्तु देखो, जब याग कुछ समय पश्चात सम्पन्न हुआ, निवृत्तियों में सम्पन्न हो गया। सम्पन्न हुआ तो बेटा! अब वह दक्षिणा का क्रियाकलाप किया जाता है। द्रव्य की आभा रह जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह गऊ इत्यादियों को अर्पित करने लगे, ब्राह्मणों को प्रदान करने लगे। जब प्रदान करने लगे तो मानो देखो, उनमें बहुत-सी गऊएँ वृद्ध, जिसको दूसरो को देने से लाभप्रद नहीं होता। उसमें एक पापाचार बन जाता है। तो मानो क्योंकि यहाँ तो परम्परा रही है

पुत्र-सम्पदा

बेटा! उनका एक बाल्य है मानो देखो, वह बाल्य केवल सात वर्ष का ब्रह्मचारी है। सात दिवस और सात वर्ष का ब्रह्मचारी मानो अपने पितर को दृष्टिपात कर रहा है। पितर देखो, जब दान देने लगे तो बहुत-सी गऊएँ वृद्ध थी। उन्होने कहा-हे पितर! ये क्या कर रहे हो? जैसे तुमने याग किया, अब जिसको तुम समर्पित कर रहे हो गऊ इत्यादियों को, इनमें बहुत-सी गऊएँ वृद्ध है। इनको देने से तुम्हे लाभ नही होगा। इनमें और पापाचार बन जाएगा। क्योंकि वस्तु वह समर्पित करनी चाहिए जिस वस्तु का वो उपयोग कर सकें और अपने में धारयामि बना सके। भगवन्! आप यह क्या कर रहे है क्योंकि जब सर्व सम्पदा को आपने देखो, समर्पित करना है तो मैं, मानो माता-पिता का पुत्र भी एक सम्पदा होती है। आप मुझे किसे प्रदान करोगे?

पिता की आज्ञा

मेरे प्यारे! देखो, विश्वश्रवा ने आवेश में आ कर कहा-कि हे ब्रह्मचारी! मैं तुझे मृत्यु को प्रदान करूगाँ। मेरे प्यारे! देखो, जब मृत्यु का नामोकरण किया, तो वह बाल्य मौन हो गया। मेरे प्यारे! देखो, उनका वो कर्म चलता रहा। सांयकाल को वह सम्पन्न हुआ। जब याग सम्पन्न हो गया, दक्षिणा से निवृत्त हो गए। तो मुनिवरों! देखो, रात्रि का जब समय आया तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वश्रवा अपने आसन पर विद्यमान है। शांतचित्त अपने में मनन कर रहे है।

मेरे पुत्रो! देखो, वह बाल्य, बालक नचिकेता मानो उनके समीप पहुँचे और उन्होने कहा चरणों को स्पर्श करते हुए, प्रभु! हमारा जो गोत्र है, वो उद्दालक है। और उद्दालक गोत्र का जो निकास हुआ था वो हरितत् गोत्रों से हुआ था और हरितत् गोत्र का जो निकास हुआ वो अंगीरस गोत्रों से हुआ और अंगीरस गोत्रों का जो निकास हुआ वो वृत्तिका गोत्रों से हुआ और वृत्तिका गोत्रों का जो निकास हुआ है वो ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से हुआ। तो हे प्रभु! मानो देखो, इनमें बहुत से ब्रह्मवेत्ता और विज्ञानवेत्ता भी हुए है परन्तु आत्मवान भी बहुत से महापुरूष हुए। हे प्रभु! कोई ऐसा नहीं हुआ कि जिसके माता-पिता ने जो वाक् कहा है, और बाल्य ने मानो पुत्र ने उसकी अवहेलना की हो। हे प्रभु!

मैं आपके समीप आया हूँ। प्रभु! आप मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं मृत्यु को चला जाऊँ। मानो देखो, आप मुझे आज्ञा नही देगे तो ये मानो देखो, यह बडा अवृत्त होगा। क्योंकि हमारा जो वंशलज है यह बडा विचित्र रहा है। इसमें सब ने अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन ही किया है। कोई ऐसा नही हुआ जिसने माता-पिता की आज्ञा की अवहेलना की हो।

मेरे प्यारे! देखो, बाल्य ने कोई अपराध तो किया नहीं था, तो उन्होने बालक नचिकेता के वाक्यों को पान करके कहा-जाओ, तुम मृत्यु आचारकं प्रवाहं ब्रहे कृतो संभवः उन्होने कहा-तुम मृत्यु आचार्य के समीप प्रवेश कर जाओ। मेरे प्यारे! देखो, इसके दो स्वरूप बन गए। आचार्य का अभिप्राय यह है जो पठन पाठन कराने वाला हो। परन्तु मृत्यु का अर्थ यह भी बनता है कि जिस महापुरूष ने मृत्यु को विजय कर लिया है मानो देखो, उन्होने ये विचारते हुए कि एक वाक्य के कई प्रकार के मानो स्वरूप माने गए हैं।

यमाचार्य का गृह

तो बालक नचिकेता ने कहा-प्रभु! मुझे आज्ञा दीजिए। आज्ञा पा करके वे वहाँ से गमन करते है और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, वह मृत्यु-आचार्य के गृह में उन्होने प्रवेश किया। मानो उनका नामोकरण यमाचार्य भी था और मृत्यु-आचार्य भी। क्योंकि वह यमाचार्य इसलिए कहलाते थे क्योंकि उन्होने मृत्यु को भी विजय कर लिया था। वे यमं ब्रह्मे व्रतं यमं ब्रह्माः वृतो मेरे प्यारे! देखो, मृत्यु आचार्य के गृह में जैसे ही ब्रह्मचारी का प्रवेश हुआ तो माता ने कहा-आओ, भगवन्! वे बड़ी प्रसन्न हुई। उनकी दिव्या ने कहा-हे प्रभु! मानो आपका आगमन? उन्होने कहा कि मैं मृत्यु-आचार्य के दर्शन करने आया हूँ। उन्होने कहा-कि विराजिए, अन्न, जल का पान कीजिए। और मानो कुछ समय के पश्चात उनका आगमन होगा।

उन्होंने कहा-माता! कदापि नही। जब तक आचार्य का मुझे दर्शन नही होगा, तब तक मैं मानो देखो, अन्न, जल का पान नही करूँगा। मेरे प्यारे! देखो, दिव्यासे, अपने में बडी मानो प्रसन्न और शोकातुर हो गई और विचारने लगी कि ब्रह्मे व्रतं बृहि मानो ये तो

ब्रह्मचारी बड़ा विचित्र है। जिस गृह में मानो अन्न, जल से पीडित एक ब्रह्मचारी वास करता है उस गृह में वो ब्रह्मचारी मानो पापों को प्रदान कर देता है। अन्नादं भूतं ब्रह्मेः मानो समेट कर के उसे प्रदान कर देता है। उसके पुण्यों को ले लेता है।

यमाचार्य की पत्नी का मनन

मेरे प्यारे! देखो, हमारे यहाँ एक वृत्तिका मानी गए है। जिस गृह में देखो, अतिथि ब्रह्मवेत्ता अन्न, जल से पीडित रह जाए मानो देखो, वह अपने पापों को त्याग देता है और वहाँ के पुण्यों को ले जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब यह वाक् उन्होने वृत्ति अपने में विचारी तो दिव्यासे बड़ी मानो देखो, शोकातुर होने लगी। विचारने लगी, प्रभु से प्रार्थना करने लगी हे प्रभु! ऐसा ब्रह्मवेत्ता जिसने उद्दालक गोत्र में जन्म लिया। हमारे यहाँ उद्दालक गोत्र बड़ा विचित्र माना गया है। क्योकि उनमें ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मनिष्ठ, सत्यवादी महापुरूषों का जन्म होता है। मानो देखो, हम बंडे आभारी बन गए है। तो ये मानो प्रभु से मनन, चिन्तन कर रही थी।

पत्नी की व्याकुलता

मानो तीन रात्रि और तीन दिवस हो गए। ब्रह्मचारी अन्न और जल से पीडित। मेरे प्यारे! देखो, ब्रहे कृतम् जब तीन दिवस हो गए तो यमाचार्य कहीं से भ्रमण करते हुए मानो उन्होंने अपने गृह में प्रवेश किया। पत्नी बड़ी व्याकुल हो रही है। उन्होंने कहा-हे दिव्या! तुम व्याकुल क्यां हो? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं इसलिए व्याकुल हूँ क्योंकि देखो, गृह में उद्दालक गोत्र के एक ब्रह्मचारी विद्यमान है। जो द्वार पर विद्यमान है उन्हे तीन दिवस हो गए है। उन्होने अन्न, जल पान नही किया। इसलिए हमारे पुण्य नष्ट हो रहे है और पाप बलवती हो रहे है।

यमाचार्य द्वारा तीन वर

बेटा! यमाचार्य ने उस वाक् को स्वीकार कर लिया। मानो मृत्यु-आचार्य अब वह देखो, बालक के समीप जाते है, गमन करते है। ब्रह्मणे व्रताः मेरे प्यारे! देखो, उन्होने मन ही मन में विचारा यह तो बडा विचित्र ब्रह्मचारी है। उन्होने कहा-हे ब्रह्मचारी! अव्रतं ब्रहे मेरे

प्यारे! यह उच्चारण करते ही बालक नचिकेता ने नम्रता से ऋषि के चरणो को स्पर्श किया और ऋषि के चरणों में मानो वह अप्रतम् स्पर्श करते हुए बोले-कि प्रभु! मैं पिता की आज्ञा से तेरे गृह में, मेरा गमन हुआ है। उन्होने कहा-ब्रहे मैं तुम्हें तीन रात्रि और तीन दिवस तक तुमने मेरे यहाँ गमन किया है। मैं तुम्हें तीन वर देता हूँ। मेरे प्यारे! तीन वचन देता हूँ जो तुम्हे स्वीकार है।

प्रथम वर

मेरे प्यारे! देखो, बालक नचिकेता ने कहा हे भगवन! मैं सबसे प्रथम उसी वर को पाना चाहता हूँ जिसमें मेरे पितर ने मानो देखो, सर्व द्रव्य देखो, वह सब द्रव्य यज्ञ में प्रदान कर दिया अथवा हूत कर दिया है। मेरी इच्छा यह है कि जिस अभिलाषा से मेरे पितर ने वो याग किया है मेरे पितर की वह इच्छा पूर्ण हो जानी चाहिए।

स्वर्ग की जिज्ञासा

मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य ने, मृत्यु ने कहा-तथास्तु यह उच्चारण करते हुए मौन हो गए। उन्होंने कहा-भगवन्! क्या मेरे पितर की इच्छा पूर्ण हो जाएगी? यमाचार्य ने कहा-यथार्थ होगी। मानो देखो, इच्छाएँ पूर्ण होती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उच्चारण करके यमाचार्य ने कहा-हे ब्रह्मचारी! तुम द्वितीय वचन को स्वीकार करो। उन्होने कहा-कि भगवन्! मैं यह चाहता हूँ कि मैं उस अग्नि ब्रह्मे में मानो देखो, द्वितीय वचनं ब्रह्माः मेरी इच्छा यह है कि मैं स्वर्ग को जानना चाहता हूँ कि ये स्वर्ग क्या है?ॆ

तीन प्रकार की अग्नियाँ

मेरे पुत्रो! देखो, यमाचार्य, मृत्यु ने, जिन्होने मृत्यु को विजय कर लिया था, उन्हे मृत्यु भी कहते थे। आचारं ब्रह्मे और उन्हे यमाचार्य भी कहा जाता था। मेरे प्यारे! उन्होने कहा-हे ब्रह्मचारी! स्वर्ग उस मानव को प्राप्त होता है जो अग्नियों की पूजा करता है अथवा अग्नि की पूजा करने वाला ही मेरे पुत्रो! देखो, स्वर्ग को प्राप्त होता है। उन्होने कहा-प्रभु! वह अग्नि कौन-सी है, जिन अग्नियों की पूजा करने से मानो देखो, मैं स्वर्ग में जा सकूँगा। तो मुनिवरों! देखो, यमाचार्य ने कहा ये तीन प्रकार की अग्नियाँ है।

ब्रह्मचारी, ब्रह्मचरिष्यमि, मानो देखो, गृहवृत्तिका और देखो, जो गृह को त्याग कर के विद्यालयों में अपनें अनुभव की शिक्षा देते है मानो देखो, तीन प्रकार की अग्नि कहलाती है।

मेरे प्यारे! सबसे प्रथम अग्नि का नाम देखो, गाहर्पथ्य नाम की अग्नि माना गया है। जिस गाहर्पथ्य नाम की अग्नि का जो पूजन करता है वह ब्रह्मचारी है। पूजन का अभिप्राय यह है कि उस अग्नि को क्रियात्मकता में लाना हैं। क्रिया में लाने का नाम ही मानो उसकी पूजा कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी प्रातः कालीन अपने में देखो, वह विद्यमान हो करके, वह प्रातः कालीन याग करता है। अग्नि की पूजा करता है, अग्न्याधान करता है और अग्न्याधान करके जो अग्नि अन्तर्हृदय में प्रदीप्त हो रही है जिससे वो अधययन करने वाला है। मानो अधययन करता है वह उसी के द्वारा एकान्त स्थली में वेद का अधययन कर रहा है। और वेद में जो विद्याएँ है उनका जो अधययन करने वाला है वही मानो देखो, ब्रह्मणं ब्रहे वह ब्रह्मचारी कहलाता है। हे ब्रह्मचारी! मानो देखो, उस अग्नि का पूजन करो। जिस अग्नि के द्वारा, जिस अग्नि में मानो देखो, मानव सदैव निहित रहता है। वाणी जिसमें रत्त हो जाती है, उस अग्नि का पूजन करो। जिस अग्नि के द्वारा तुम तेजोमयी बन करके मानो देखो, ब्रह्माण्ड के ब्रह्माण्ड को जानकर के तुम इस संसार सागर से पार हो जाओगे।

प्रवृत्तियों में ब्रह्म

मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य ने कहा-हे बाल्य! मानो देखो, सबसे प्रथम तुम ब्रह्मचरिष्यामि, तुम ब्रह्मचारी बनो। और ब्रह्मचारी वो बनता है जो गृह में, जो गाहर्पथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता है मानो देखो, वह ब्रह्मचरिष्यामि, वह ब्रह्मचारी है। जो प्रत्येक श्वास के साथ में देखो, ब्रह्म का चिन्तन करता है और ब्रह्म का चिन्तन करने वाला मानो देखो, वो मनका बनाता है और मनका बना करके सूत्र में वो सूत्रित कर देता है और वही सूत्रित होता हुआ मानो देखो, अधययन करता रहता है। मानो देखो, अधययन करता

रहता है, मानो देखो, ब्रह्मचारी ही जानता है कि ब्रह्मचारी कौन होता है? जो मानो देखो, अपनी प्रवृत्तियों को ब्रह्म में पिरो देता है।
मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो ब्रह्मचारी अपने में आश्चर्य में हो गए। उन्होने कहा-हे ब्रह्मचारी! आओ, मानो देखो, तुम अपने में याज्ञिक बनो और याज्ञिक बन करके तुम अपनें जीवन को ऊर्ज्वा में ले जाओ। मेरे प्यारे! देखो, जब तुम्हारें शब्दों में इतनी सार्थकता आ जाए कि वह गाहर्पथ्य नाम की अग्नि का पूजन करने लगे, उन शब्दों में इतनी सार्थकता आ जाए मानो देखो, वो अपनें में ब्रह्म का दर्शन करने लगे। हे ब्रह्मचारी! देवताओं की सभाओं में वही तो सुशोभनीय होता है जो ब्रह्मचारी बन करके देवताओं के समीप चला जाता है।
मेरे पुत्रो! देखो, जब उन्होने यह वाक् वर्णन किया तो ब्रह्मचारी बड़ा प्रसन्न हुआ उन्होने कहा-धन्य। हे प्रभु! आपने मेरे नेत्रां में मानो मेरी प्रवृत्तियों में प्रकाश आ गया है। आप को धन्य है, प्रभु! मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी भिन्न, भिन्न प्रकार का अधययन करता हुआ अपने में अपनेपन का भान करने लगे। मानो देखो, वह ब्रह्मचरिष्यामि अपने में ब्रह्मव्रणोति अप्रतम् मानो देखो, ऊधर्वा में गमन करने वाला ये मानो ब्रह्मचरिष्यामि बनता है और वो मृत्यु को विजय कर लेता है।

मृत्युञ्जयी

मृत्यु को कौन विजय कर लेता है? जो ब्रह्मचारी चरी को जान लेता है। चरी कहते है, प्रकृति को और ब्रह्म कहते है, परमपिता परमात्मा को। जो मानो देखो, चरी को ब्रह्म में पिरोना जानता है और ब्रह्म को चरी में दृष्टिपात करने लगता है। मेरे प्यारे! वही तो अपने में देखो, ब्रह्मचरिष्यामि बन करके वह देवताओ की सभा में सुशोभनीय हो जाता है। मानो देखो, वह ब्रह्मचारी अधययन करता हुआ, आत्मवेत्ता बनने के लिए वह मानो देखो, तीन प्रकार की प्रतिभा को अपनाता रहता है। मानो देखो, मैं आधयात्मिकवाद में नहीं, जो ऋषि ने वर्णन किया कि तुम मानो देखो, सबसे प्रथम इस अग्नि की पूजा करो।

अग्नि का सदुपयोग

पूजा का अभिप्राय यह है कि मानो उसका सदुपयोग करना। पूजा का अभिप्राय यह है कि मानो देखो, जैसे अग्नि की हमें पूजा करनी है, अग्नि का सदुपयोग करना है। अग्नि के द्वारा मानो याग करना है। उसी अग्नि को सूक्ष्म बना करके, ज्ञानरूपी अग्नि बना करके बेटा! उसे अपने अन्तर्हृदय में धारण करना है। वही अग्नि मानो सूक्ष्म बन करके गृहपथ्य मानो देखो, वही अग्नि गृहपथ्य नाम की अग्नि बन जाती है। जब मानो वही ब्रह्मचारी, जब गृह में प्रवेश करता है तो मानो देखो, वह गृहपथ्य नाम की अग्नि का पूजन करता है। पूजन का अभिप्राय यह कि जो वो जानता है उसे वो क्रिया में लाता है। यह अपने में व्याख्या देता रहता है कि जैसे हमें जल की पूजा करनी है तो जल का सदुपयोग करना है जैसे मानो हमें पृथ्वी की पूजा करनी है तो पृथ्वी का सदुपयोग करना है। मानो इसके गर्भ में जो भी ज्ञान है, विज्ञान है उसे क्रिया में लाना है। मानो देखो, आपोमयी ज्योति जलं ब्रहे उसमें जो प्राणसत्ता विद्यमान है उसे जान करके, उसे क्रिया में लाने का नाम ही मानो देखो, वह उसका उपयोग है और वह गृहपथ्य नाम की अग्नि कहलाती है। गृह में मेरे पुत्रो! देखो, प्रत्येक माता-पिता यह चाहते है कि हमारा गृह स्वर्ग बन जाए।

स्वर्ग-गृह

परन्तु गृह स्वर्ग कैसे बनेगा? तब बनता है जब माता, पिता प्रातः कालीन देखो, ब्रह्म का चिन्तन करते हैं, ब्रह्मयाग करते है। ब्रह्मयाग के पश्चात, देवयाग करते है। देवयाग के पश्चात पितर् याग करते है। पितर् याग के पश्चात अतिथि याग करते है। अतिथि याग के पश्चात वे बलिवैश्य याग करते हुए मानो देखो, अग्नि का चयन करते है। मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्मणे देखो, इससे लाभप्रद क्या होता है? जो मानो माता, पिता प्रातः कालीन ब्रह्म का चिन्तन करते है। मानो देखो, रात्रि के अंतिम चरण में विद्यमान हो करके, जो ब्रह्म की सृष्टि को निहारते रहते है, मानो उद्गीत गाते रहते है। उसके पश्चात सूर्योदय होने के पश्चात वे देव पूजा करते है, याग करते है। देवताओ के पूजन का

अभिप्राय यह कि अग्न्याधान करके मानो देखो, वह, जो हमारे शरीर में विद्यमान जो देवता है, पञ्चमहाभूत है। जब देखो, याग की तरङें स्वाहा के साथ में जाती है तो वह देवता ऊर्ध्वा को गमन करने लगते है। मेरे प्यारे! देखो, पितरों की जब हम सेवा करते है। सेवा का अभिप्राय यह है कि मानो उनको अन्न इत्यादि का पान कराना और उनको सुखद पहुँचाने का नाम ही मानो देखो, वह पितर याग कहलाता है।

पितर याग

याग का अभिप्राय यह कि जितने भी संसार के शुभ क्रियाकलाप है। उन सर्वत्र का नाम एक याग कहा गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह पितर याग भी मानो देखो, पितरों की आज्ञा का पालन करना है। हमारे यहाँ पितरों की जो व्याख्या है वो बडी विचित्र है। हमारे यहाँ पितर उन्हें कहते हैं जो माता-पिता होते हैं, जो जननी माता है। पिता रक्षक है मानो उन्हे भी हम पितर-जन कहते है। आचार्य जनों को भी पितर कहते है। जो हमें जीवन देते है मानो देखो, सूर्य भी हमारा पितर है, राजा भी पितर है, चन्द्रमा भी पितर है और अग्नि भी पितर कहलाती है। मानो देखो, आपोमयी भी एक पितर है, वायु भी एक पितर है, ये सर्वत्र मेरे पुत्रो! देखो, पितर ही माने जाते है।

पितरों का अभिप्राय यह है कि जो मानो हमारी रक्षा करने वाले है और जिनका हम सदुपयोग करते रहे है। बेटा! देखो, वो सब पितर कहलाते है। मेरे प्यारे! देखो, माता-पिता को भोज, उनकी आज्ञा का पालन करने का नाम पितर याग है। मानो आचार्यजनों ने जो हमें अधययन कराया है, ज्ञान और विज्ञान को अधययन में लाए है। वे मानो देखो, इन जड. पितरों की आभा में ले गए है इसको ज्ञान और विज्ञान में ले गए है तो मुनिवरों! देखो, वे भी आचार्यजन हमारे पितर है। बेटा! देखो, मुझे बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। परन्तु उस काल की चर्चा नही केवल यह कि मुनिवरों! जब दीक्षान्तम् दीक्षा लेता है ब्रह्मचारी, तो मेरे प्यारे! देखो, वह आचार्यजनों की आज्ञा पालन करके, जो उन्होने अधययन में हमें वर्णित किया है उस अधययनता को हम क्रियात्मक रूप में लाने का प्रयास करें।

मेरे प्यारे! देखो, वह क्रिया ही हमारे जीवन को उद्बुद्ध करती है। जैसे सूर्य प्रातःकाल से उदय होकर सायं काल तक हमें ऊर्ज्वा देते हैं, प्रकाश देते रहते है। उसी ऊर्ज्वा से हम पनपते रहते। उसमें कितना विज्ञान है, कितनी सार्थकता है और मानो देखो, उस विज्ञान को हम अपने में लाने का प्रयास करें। मेरे प्यारे! देखो, पितरो की आज्ञा का पालन करना है। चन्द्रमा अमृत देता रहता है। उस अमृत को जानने के लिए देखो, विज्ञानवेत्ता बनना होगा और विज्ञानवेत्ता बनकर के उस अमृत को जान करके और उस अमृत का स्रोत कहाँ है? मुनिवरों! देखो, चन्द्रमा का समन्वय सूर्य से है और सूर्य का समन्वय द्यौ से है और द्यौ का समन्वय मेरे प्यारे! देखो, अप्रतं ब्रह्मणां ब्रहे कृतं ब्रह्मः मुनिवरों! देखो, उस परमपिता परमात्मा से है जो जड़ और चैतन्य जगत दोनो को ऊर्ज्वा में गमन करा रहा है। इसलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती में रत्त हो जाएँ।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह एक दूसरे में जो पिरोया हुआ-सा जगत दृष्टिपात होता है ये बडा अनुपम है। मानो देखो, इन पितरों की हमें अहाः पितरं ब्रह्मे इन पितरों को जानना है। कही जानने का नाम सेवा है, कही मानो देखो, उनको अन्न इत्यादि देने का नाम पितर याग है। मेरे प्यारे! देखो, यहाँ पितरों की विवेचना बडी विचित्र मानी गई है। जो प्रकाश देते है, अनुपमता देते है, अमृत देते है, जो गति देते है, जो तेजोमयी बनाते रहते है बेटा! ये सर्वत्र देवता माने गए हैं। इन देवताओं के प्रति हम अपनें ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाएँ, अपने में मानो अधययनशील बन करके मेरे पुत्रो! देखो, यह अप्रतं ब्रह्मे व्रताः मुनिवरों! देखो, इसका नाम हमारे यहाँ गृहपथ्य नाम की अग्नि उसका हम वर्णन कर रहें थे। गृहपथ्य नाम की अग्नि वह कहलाती है जो गृहों में माता, पिता प्रायः क्रिया कलापों को करते है तो बाल्य उसी के अनुसार मानो बरतने लगते है। तो बेटा! गृह स्वर्ग बन जाता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, स्वर्ग क्या है? इसको जाननें के लिए मानव अपने में मानवीयता का ही, अपने में भान करता रहता है विचारता रहता है कि हे मानव! तू मननशील बन। मननशील बनकर के देवत्तव को अपने में धारण कर।

मानव की महानता

तो मेरे प्यारे! देखो, विचार क्या चल रहा है। मैं कोई विशेष विवेचना देने नही आया हूँ। हम बेटा! व्याख्या देने नही आए है। विचार कुछ करने के लिए आए है वह विचार-विनिमय क्या है? बालक नचिकेता से यमाचार्य कहता है-हे ब्रह्मचारी! देखो, इन अग्नियों का पूजन करने से मानव महान बनता है और विचित्र बनता है। हमारे यहाँ भगवान मनु ने एक नियमावली युक्त की थी। कि मुनिवरों! देखो, एक अधययन की प्रति क्रियाएँ मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ तृतीया अग्नि का नाम जैसे यह गृहपथ्य नाम की अग्नि है गार्हपथ्य नाम की अग्नि है इसी प्रकार वह जो आहवनीय अग्नि है मानो देखो, इसमें ब्रह्म इसमें माता-पिता अपने गृह को त्याग करके तपा करते हैं। वह मेरे प्यारे! देखो, विद्यालयों में शिक्षा देते हैं। और विद्यालय में माता अपने अनुभव की चर्चाएँ कन्याओं को, पुत्रियों को प्रदान करती रहती है और मानव अपने अनुभवों को देता हुआ ब्रह्मचारियों को ऊधर्वा गमन कराता है।

अग्नि पूजक स्वर्ग-गामी

तो मेरे प्यारे! देखो, यह परम्परा, एक नियमावली राजा अश्वपति के यहाँ भी इसी प्रकार की एक नियमावली बनी हुई थी परन्तु देखो, उसी से मानव का जीवन एक महानता में गमन करता रहता है। तो मुनिवरों! देखो, ये है अग्नियाँ। इन अग्नियों का पूजन करने वाला ही मानो देखो, स्वर्ग का गामी बनता है, वह स्वर्ग को प्राप्त होता है। ब्रह्मचर्य आश्रम वृत्ति कहलाता है गृह आश्रम बेटा! गृहपथ्यवादी कहलाता है मानो देखो, आहवनीय अग्नि अब्रतम् अपने में धारण करता रहता है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, यह भिन्न भिन्न प्रकार की जो अग्नियाँ है, इन अग्नियों का पूजन करना, इन अग्नियों का अग्न्याधान करना इसी का नाम मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ स्वर्ग कहा गया है। मैं स्वर्गश्च ब्रह्मा व्रतेः हे ब्रह्मचारी! मैं तुम्हे स्वर्ग में ले गया हूँ। आचार्यों के द्वारा और मानो पितरों की आज्ञा का पालन करना, ये सब आचार्य जन हमारे सब पितर कहलाते है। इन पितरों के द्वार पर हमें जाना है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक् उच्चारण करके ऋषि मौन होने लगे। उन्होने कहा-हे नचिकेता! ये मैने तुम्हारे मानो देखो, द्वितीय प्रश्न का यह उत्तर दिया कि स्वर्ग क्या है? यह तीन प्रकार की अग्नियों का पूजन करना है। मानो गाहर्पथ्य, गृहपथ्य, आहवनीय अग्नियों इन तीन का पूजन करने का नाम ही मानो देखो, स्वर्ग कहा जाता है।

अग्नि का अभिप्रायः तुमने जान लिया कि आन्तरिक अग्नि और बाह्म जो अग्नि है इन दोनो का एक दूसरे में समावेश करना है ज्ञान, विज्ञान और विचार के द्वारा मानो देखो, इसी प्रकार गृहपथ्य नाम की अग्नि है, इसी प्रकार आहवनीय अग्नि है। बाह्य और आन्तरिक दोनो को एक सूत्र में लाना है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह उच्चारण करता हुआ ऋषि अपने में मौन हो गया और ऋषि ने कहा धन्य ब्रह्मे कृतम्। मेरे प्यारे! जब ऋषि ने यह कहा कि भगवन्! ब्रहे, हे नचिकेता! तुम अगले वर को, मानो तुम क्या चाहते हो? उन्होंने कहा-हे भगवन्! ये तो आपने मुझे वर्णन करा दिया, मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न हो गया है। ये तो आपने मुझे स्वर्ग नहीं, मानो मोक्ष के मार्ग के लिए तुमने मुझे प्रेरित कर दिया। अब मैं यह चाहता हूँ भगवन्! मेरी इच्छा यह है मेरे मन की इच्छा यह है कि आत्मा इस शरीर को त्याग करके कहा जाता है?

मेरे प्यारे! देखो, जब बालक नचिकेता ने यह प्रश्न किया तो यमाचार्य, मृत्यु कहते है-हे ब्रह्मणां ब्रह्मे, हे बाल्य! जो तुम प्रश्न कर रहे हो इसको बंडे, बड़े महापुरूष मानो अपने में मौन हो गए है। तुम यह प्रश्न मत करो, तुम इस संसार में देखो, जो वस्तु चाहते हो वही तुम्हे प्राप्त की जा सकती है। परन्तु संसार के राष्ट्र को भोगो। संसार में, अपने में, मानो नाना दुग्ध देने वाले पशु को अब देखो, गौ इत्यादि होने चाहिए, सुन्दरियाँ होनी चाहिए हे बाल्य! तुम इस आत्मा के प्रश्न को न लो।

नश्वर संसार

तो मुनिवरों! देखो, नचिकेता ने कहा प्रभु! मैं आपके वाक्यो को स्वीकार कर लेता हूँ। हे प्रभु! मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो देखो, यह संसार नश्वर दृष्टिपात आता है।

देखो, जैसे गौ है, मुझे इससे स्नेह हो गया है। यदि उसका विच्छेद हो गया तो मुझे कष्ट होगा। मानो देखो, मैं प्रभु के देखो, सर्वत्र राष्ट्र को भोगूँ। राष्ट्र तो आज है कल नही रहेगा। परन्तु अपार कष्ट होगा भगवन्! तो भगवन्! मुझे और वह वस्तु प्रदान कीजिए जो मानो देखो, मैं शरीर को त्यागने के पश्चात मेरे अन्तर्हृदय में बनी रहे। हे प्रभु! मैं उस ज्ञान और विज्ञान को चाहता हूँ, मैं उस आत्मा के प्रश्न को जानना चाहता हूँ।

मेरे प्यारे! उस बालक नचिकेता के वाक्यों को श्रवण करके मुनिवरों! देखो, यमाचार्य ने उन्हे नाना सुन्दरियाँ और स्वर्ण से गुथे हुए मानो देखो, रथ इत्यादियों को उन्होने दृष्टिपात कराया और इस पृथ्वी के राष्ट्र को कहा-कि तुम इसको भोगो। तो मुनिवरों! देखो, जब बालक ने ये दृष्टिपात किया, नचिकेता ने उन्हे कहा-पितर! नही चाहिए, यह मुझे नही चाहिए, मुझे तो वो चाहिए जिससे मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ। हे प्रभु! मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होने यह कहा, उन्होने ब्रह्मणां ब्रहे देखो, यमाचार्य ने अपने मन ही मन में यह निश्चय कर लिया कि यह बालक तो बडा विचित्र है। मानो यह इस योग्य है। देखो, जो तीनो आश्रमों को त्याग करके अन्तिम में प्रवेश करना चाहता है, तो यह मानो देखो, उस विद्या का उत्सुक है। यह मानो अपने अन्तर्हृदय में उसको धारण करना चाहता है। मेरे पुत्रो! देखो, वह तीन आश्रम चले गए और तीनों आश्रमों को पार होकर के नचिकेता जाना चाहता है। तो यह वास्तव में आग्नेय बनना चाहता है।

आग्नेय प्रवृत्ति

तो मेरे पुत्रो! देखो, उन्होने कहा हे! ब्रह्मचारी। तुम्हें धन्य है तुम मानो देखो, संसार के वैभव को नहीं भोगना चाहते, तुम्हें धन्य है, तुम्हारा जीवन धन्य है। तो उन्होंने कहा विराजो, वे विराजमान हो गए और उन्होंने कहा-हे नचिकेता! मानो तुम्हारा जीवन बड़ा महान है? तुम्हारी जो वृत्तियाँ है, वो बडी महान बन गई हैं, तपोमयी बन गई हैं। हे बाल्य! आओ, मेरे प्यारे! वो विराजमान हो गए और उन्होने कहा कि ब्रह्मणे व्रतं देवाः

यह आत्मा शरीर को त्याग कर के कहाँ जाता है। ये प्रसंग तो बड़ा विचित्र है, बड़ा एक महान है। परन्तु उससे पूर्व यह देखो, तुम चौथे आश्रम में प्रवेश कर गए हो। तुम मानो सन्यस्थ बन गए हो और तुम्हारा जीवन आग्नेय बन गया है। मानो देखो, जो संन्यास आश्रम में प्रवेश करता है वह तीनों आश्रमों को तो बब्रति में प्रवेश करा देता है, या उसको उल्लांघ जाता है। मानो तुम उसको उल्लांघ गए हो, उससे दूरी चले गए हो। मानो देखो, अग्ने व्रतं ब्रह्मे जिस मानव की आग्नेय प्रवृत्ति बन जाती है।

आग्नेय उसे कहते हैं जो प्रभु के राष्ट्र में प्रवेश करके अपने को स्वीकार करके, उसका जो ज्ञान है, विज्ञान है उसका संसार रूपी मानो जो ब्रह्माण्ड हैऋ जो इसको ही निहारता रहता है और प्रभु को, उसमें एक सूत्र की भांति मानो देखो, सूत्रित करता रहता है। वह आग्नेय कहलाता है वह आग्नेय मानो देखो, जहाँ वो ज्ञान, विज्ञान और मानवीय दर्शन और आत्मवत् बनने के लिए वो सदैव तत्पर रहता है। मानो देखो, स्थूल, सूक्ष्म और कारण इन शरीरों को जान करके मानो देखो, एक दूसरे में इनको समावेश करके जो मोक्ष की पगडण्डी को प्रवेश करना चाहता है।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि इस प्रकार उसे वर्णन कराने लगे। बेटा! देखो, वर्णन क्या है? उन्होने कहा कि यह आत्मा जब शरीर को त्याग देता है। तो मानो देखो, अन्तं ब्रह्मे कृता जो अन्त में मानव के विचार होते हैं मन्थन किया जाता है। अन्त में जो विचार होते है शरीर को त्यागते समय वही संस्कार, चित्त के मण्डल में जो संस्कार होते है उसके अनुसार किसी माता के गर्भ में वो प्रवेश कर लेता है।

मानो देखो, यह वाक् उन्होने कहा, उन्होने द्वितीय युक्ति इस प्रकार कराई कि आत्मा के मानो बहुत से क्रिया कलाप है। मानो देखो, उनको सर्वत्र जानकर के वायु मण्डल में जो नाना प्रकार के देखो, वृत्त कहलाते है। वायु है, जैसे देखो, इन्द्र वृत्तिका सम्भोति ब्रह्मा। नाना प्रकार की वायुओं में यह गमन करता हुआ, यह पुनः चित्त के संस्कारों के आधार पर रहता है। कुछ आत्माएँ ऐसी होती हैं जो मोक्षं ब्रह्मे पगडण्डं ब्रह्मे कृताः जो मानो देखो, वह सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर को जाने हुए मानो देखो, वह अपने कारण में

लय होकर के देखो, स्थूल और सूक्ष्म को जान करके वह जो आत्मं ब्रह्मे जो मानो देखो, कारण शरीर में प्रवेश करके परमात्मा के समीप चला जाता है। मानो देखो, कुछ ऐसी भी आत्माएँ है। ऐसा बेटा! देखो, ऋषि ने उन्हें वर्णनकराया।

कर्तव्य

तो बेटा! देखो, आज विचार, मैं कहाँ चला गया हूँ। बेटा! उद्गीत गाता हुआ। मेरे पुत्रो! देखो, विश्वश्रवा ने इसी भावना से यज्ञ किया कि मैं प्रभु को प्राप्त हो जाऊँ। बेटा! जो भी मानव संसार में क्रियाकलाप करता है, चाहे वह भौतिकवाद की करता है, चाहे वह आधयात्मिकवाद की, उसके मन में एक ही प्रबलता होती है कि मैं मृत्यु से पार हो जाऊँ, मेरी मृत्यु नहीं होनी चाहिए और मृत्यु से पार होना ही मेरा यह कर्तव्य है।

तो बेटा! देखो, विश्वश्रवा भी मृत्यु से पार होना चाहते थे। नचिकेता भी मृत्यु से पार होने के लिए तत्पर हो गए। बेटा! देखो, वह अपने को आग्नेय जीवन में ले गए। आग्नेय वही होता है जो प्रभु की सृष्टि को, प्रभु के राष्ट्र को विचारता रहता है। उसके ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहता है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल विचार-विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा जो संसार का नियन्ता, निर्माण करने वाला है। जो मानो देखो, यज्ञोमयी स्वरूप कहलाता है। उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, हम इस संसार सागर से पार हो जाए, जो मानो देखो, मान, अपमान वाला यह जगत है। जहाँ कोई किसी का मान कर रहा है, कोई किसी का अपमान कर रहा है। कोई मानो देखो, प्रीति कर रहा है। इस संसार सागर से मानव को पार होने वाले क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चाएँ तुम्हें कल प्रकट करूँगा।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर विचार-विनिमय करते हुए इस संसार सागर से पार हो जाए। ये है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हे शेष चर्चाए कल प्रकट

करूँगा। ओ३म् ब्रह्म गणाः रथं आभ्यां रेवाः। ओ३म् तनु गायन्त्वा माणं आप्यां रथप्पृवरुणाः मा णां त्वाः। ओ३म् यशश्वं प्राची गायन्त्वाः। दिनांक-०७-०५-१९८८ पानीपत, हरियाणा

३ मानवीय विज्ञान-०८-०५-१९८८

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है, मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है और उसका सदन है। मानो वह उसी में वास करता रहता है। उसी में वह निहित रहता है। तो उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में प्रायः उसका वर्णन, क्रियाएँ और उसकी महानता का वर्णन किया जाता है।

तो आज का हमारा वेदमन्त्र याग के सम्बन्ध में हमें प्रेरित कर रहा था यागामं भवितं चित्रों रथं द्यौ लोकाः वेद की आख्यिका यह कहती है कि मानव जो भी आत्मीय क्रियाकलाप करता है, उसकी तरंगें बन करके द्यौ लोक में प्रवेश हो जाती है। इसीलिए मानव को आत्मीय कर्मों में, क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहना चाहिए और विचारना चाहिए कि वह जो मेरा अनुपम देव है। मानो जिसकी प्रतिभा, जिसका विज्ञान शाश्वत माना गया है और उसी की विज्ञानशाला में, हम सब विद्यमान है। जब मानव अपने में यह स्वीकार करता है कि हम उस परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में अथवा उसकी विज्ञानशाला में विद्यमान है। तो मानव बेटा! अपने में महान और विचित्रता का, सदैव उसी में और अनावृत्तियों में रत्त हो जाता है।

याग का स्वरूप

तो मेरे प्यारे! आज का हमारा वेद मन्त्र, याग के सम्बन्ध में बड़ी विचित्र विवेचना कर

रहा है और बेटा! आज हम तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहते है, जहाँ ऋषि-मुनियों की बड़ी विचित्र उड़ाने रही है और वे ऋषि मुनियों का एक नृत्ततव होता रहा है। बेटा! एक समय कुछ ऋषि-मुनियों का एक समूह, एकत्रित हुआ और यह विचारने लगा कि वेद मन्त्रों में, याग का बड़ा वर्णन आता है। याग अपने में क्या है? तो मुनिवरों! देखो, ऋषि मुनियों में यह विचार, एक बड़ा विचारणीय रहा है। तो ऋषि-मुनि अपना अपना वक्तव्य देने लगे। उन्होंने कहा-हमारे विचार में यह जो याग है, जितने भी मानव के सुकर्म है मानो दर्शनों से गुथा हुआ, जितना भी क्रियाकलाप है, वह सर्वत्र मानो एक याग के रूप में वर्णित किया गया है। तो इसीलिए हमारा जितना भी सु है, आत्मा से जिसका समन्वय रहता है, परमात्मा का जिससे समन्वय रहता है, मानो वह सु कहलाता है। और वह महान होने के नाते बेटा! देखो, एक यज्ञमयी स्वरूप माना गया है।

तो इसीलिए हमारे यहाँ याग का बड़ा महत्त्व माना है। हमारे यहाँ देखो, नाना प्रकार के यागों का चयन, प्रायः होता रहा है जैसे अश्वमेध, अजामेध, गौमेध नाना यागों में मानव परिणत रहा है। तो मुनिवरों! देखो, ऋषि-मुनियों ने यह कहा कि याग अपने में अनूठा है, चाहे वह आध्यात्मिवाद है, चाहे वह भौतिक रूप में वर्णित किया गया है, राजा अश्वमेध याग कर लेता है, उसे अधिकार होता है। मानो देखो, अश्वमेध, अजामेध यह सर्वत्र याग मानो एक सु कहलाते है। जो मानव को मृत्यु से पार करा देते है। प्रत्येक मानव जब भी किसी क्रियाकलाप में तत्पर होता है मानो उस क्रियाओं में यह होता है कि हमारी मृत्यु नहीं होनी चाहिए, हम सब मृत्युञ्जय बनना चाहते है। प्रत्येक मात्र व्रत्तो की यह इच्छा रहती है कि हम मृत्यु से पार हो करके, इस सागर से पार हो जाए।

तो मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार की विचार धाराएँ, परम्परागतों से बेटा! मानवीय मस्तिष्कों में क्या, ऋषि मुनियों के हृदयों में नृत्त करती रही है और ऋषि अपने में विचारता रहा है। तो बेटा! देखो, मुझे वह काल स्मरण आ रहा है, जिस काल में ऋषि मुनि विद्यमान हो करके, एक-एक वेदमन्त्र के ऊपर, अन्वेषण करते रहे है, अनुसन्धान

करते रहे है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनि अपने में यह विचार रहे थे कि याग क्या है? तो उन्होंने अपना विचार दिया कि सु क्रियाकलाप का नाम याग है। वह आत्मीयता से मानो संलग्न रहता है, आत्मीयता ही वह आत्मवृत्तियों में याग कहलाता है।

ऋषियों द्वारा याग चिन्तन

तो मेरे प्यारे! देखो, जब मानव याग में इस प्रकार परिणत हो जाता है तो मानव का जीवन, एक महान और विचित्र बन जाता है। तो बेटा! देखो, ऋषि-मुनियों में यह एक कौतुक बना रहा, विचार बना रहा कि इसका निर्णय कैसे हो, हम मानो दर्शनों से, विचारों से, तो प्रत्येक वस्तु को घटित कर लेते है। आत्मीयता में, वह सुगठितता आ जाती है। परन्तु देखो, आत्मीयता वह जो विश्व ब्रह्म वह जो विश्व है वह मानो प्राप्त नहीं हो पाता, उसमें संशय बना ही रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि मुनियों ने, अपने में यह विचारने लगे तो उन्होंने कहा कि भई! चलो, गमन करते है। महर्षि भारद्वाज मुनि का विज्ञान बड़ा विचित्र है। तो वहाँ से बेटा! उन्होंने गमन किया और भ्रमण करते हुए बेटा! वह उस दण्डक वनों में पहुँचे, जहाँ महर्षि भारद्वाज बेटा! देखो, अपनी यज्ञ-क्रियाओं में रत्त रहते थे, अपने विद्यालयों में, ब्रह्मचारियों को ऊर्ध्वा में शिक्षा प्रदान करते रहते थे।

तो मेरे पुत्रों! जब वहाँ उनका महानं गमनं ब्रह्मे कृता वर्णश्य ऋषि मुनियों का वह समूह बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि के द्वार पर पहुँचा, भारद्वाज मुनि महाराज अपनी स्थली पर विद्यमान थे, शान्त मुद्रा में मुद्रित हो करके, मनन कर रहे थे। मेरे प्यारे! ऋषि-मुनियों का एक समाज, जब उनके द्वार पर पहुँचा, तो भारद्वाज मुनि महाराज ने अपना आसन त्याग दिया और आसन को त्याग करके, बेटा! ऋषि-मुनियों ने बारी-बारी, उनके चरणों की स्पर्शता की और वह नमः हो करके मुनिवरों! विराजमान हो गये। आसन तो उन्होंने प्रदान कर ही दिए थे, परन्तु महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज उपस्थित हो करके बोले-कि प्रभु! हम ब्रह्मे देखो, अओ वर्णसुता हमारा अन्तरात्मा बहुत प्रसन्न हो रहा है, और आज हमारा अपना सौभाग्य है और सौभाग्य यह कि हमारे आश्रम में ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन

हुआ, यह हमारा सौभाग्य है क्योंकि हम सदैव सौभाग्य की चर्चाएं करते रहते है, सौभाग्य को सराहते रहते है। तो प्रभु! यह तो हमारा सौभाग्य है कि हमारे यहाँ ब्रह्मवेत्ताओं का आगमन हुआ। मेरे प्यारे! वह विराजमान तो हो गये, परन्तु उन्होंने कहा प्रभु! अब हम यह जानना चाहते है आपका आगमन किसी न किसी उद्देश्य को ले करके गमन करता है आपका क्या उद्देश्य है?

महर्षि भारद्वाज का आश्रम

तो मुनिवरों! देखो, जब उन्होंने यह वाक् प्रगट किया तो सम्भव ब्रह्वा ऋषि मुनि बोले कि प्रभु! हम याग के सम्बन्ध में, अपना विचार-विनिमय कर रहे थे और यह विचार रहे थे कि यह याग अपने में क्या है? याग किसे कहते है? तो मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि तुम्हारे अन्तर्हृदय में इस प्रकार का प्रश्न क्यों उत्पन्न हुआ, इसके मूल में क्या है। उन्होंने कहा-प्रभु! मुझे तो अनायास विचार आया है और उन्हीं विचारों को ले करके, मैं आपके समीप आ पहुँचा हूँ, मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणां ब्रहे उन्होंने कहा-उद्देश्य? क्या उद्देश्य है, दृष्टिपात करना, आपके विद्यालय में जो ज्ञान और विज्ञान है उसको हम प्रायः दृष्टि में लाना चाहते है। तो भारद्वाज ने कहा-प्रभु! हम धन्य है, हम बड़े आभारी है, आईए भगवन! विराजिए। हमारे आश्रम का एक नियम है ब्रह्मवेत्ताओं! क्या हमारी यज्ञशाला में याग करो और याग करने के पश्चात मैं तुम्हारे प्रश्नों का, प्रायः जानता हूँगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दे सकूँगा। मेरे प्यारे! बड़ी नम्रता, उद्गमता ऋषियों के हृदयों में होती है।

द्यौ गामी चित्र

मुनिवरों! भारद्वाज मुनि ने जब ऐसा कहा तो वह याज्ञिक सब ऋषि-मुनि, यज्ञशाला में विद्यमान हो गये, और यज्ञशाला में बेटा! एक यज्ञं ब्रहे यज्ञशाला मानो अपनी अनूठी, एक विचित्र आभा थी, जब वह विराजमान हो गएं तो बेटा! वहाँ साकल्य विद्यमान है, अग्नि विद्यमान है, परन्तु देखो, उन्होंने, सबने अपने-अपने क्रियाकलापों को करते हुए और अनुष्ठान किया। सम्भवं ब्रह्मे वायाः जब याग का प्रारम्भ हुआ तो कोई उनमें से

ब्रह्मा बना, कोई उद्गाता बना, कोई अध्वर्यु और देखो, पुरोहित इत्यादि बन करके मानो उस याग को उन्होंने प्रारम्भ किया। सम्भव ब्रह्वा ब्रहे, जब याग का प्रारम्भ होने लगा तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज के यहाँ बड़े विचित्र यन्त्र विद्यमान थे मानो देखो, यन्त्रों में सम्भव प्रह्वा वह यन्त्रों की आभा में रत्त थे, उन्होंने कहा प्रभु! आओ, ये चित्रावली है। उन्होंने चित्रावली निहित कर दी और जैसे ही वह यज्ञमान, होता, उद्गाता, अध्वर्यु, जैसे ही याग का प्रारम्भ किया, तो बेटा! वह जो उनके यहाँ चित्रावली थी, वह महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने स्थिर कर दी और जैसे यज्ञशाला में बेटा! जो यज्ञमान बना हुआ, जो ब्रह्मा बना हुआ, वह अपने में जब स्वाहा उच्चारण करता था तो बेटा! उसके शब्द, अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके बेटा! द्यौ लोक को जाते हुए, दृष्टिपात आने लगे। जब वह द्यौ लोक में जाने लगे, तो भारद्वाज ने कहा-हे ऋषि-मुनियों! यह तुम दृष्टिपात करो मानो देखो, यह कैसा नृत्त हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, अपने में, अपनेपन की आभा, विचित्रता में सदैव रत्त रहती ही है। परन्तु देखो, अपने में अपनेपन की धारा को, अपने में, लाने के लिए सदैव तत्पर रहे तो मुनिवरों! देखो, याग प्रारम्भ हुआ, जैसे ही स्वाहा उच्चारण किया, वही शब्द बेटा! अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके, वह द्यौ लोक को जाता हुआ, दृष्टिपात आने लगा। उन्होंने कहा-ऋषिवर! तुम्हारा चित्रो रथं ब्रह्मा जो चित्र है वह द्यौ लोक में प्रवेश कर रहा है। मेरे प्यारे! जब उन्होंने कहा-तो प्रभु! यह हमारे यहाँ यज्ञस्व रूप माना, यह क्रियाकलाप, जिसके ऊपर हमने अनुसन्धान किया है, विचारते रहते है, अपने में अन्वेषण करते रहते है और मानो भिन्न-भिन्न प्रकार की आभा इसमें निहित रहती है।

शुद्ध हृदय से याग

तो मेरे प्यारे! देखो, अमृतं ब्रह्मा ऋषि-मुनि अपने में अमृत का पान करते रहे है, अमृत का पान करने के पश्चात उन्होंने कहा-धन्य है, प्रभु! आप ने हमें यह नाना प्रकार का, मानो चित्र चित्रण कराया है, हम बड़े सौभाग्यशाली है। तो मेरे प्यारे! देखो, यागां रुद्रों वसुस्तुं ब्रह्मयागा अपने में, याग में बेटा! मानव परिणात रहता है। बेटा! यज्ञशाला में

विद्यमान हो करके, मानो देखो, अपने याग में परिणत हो करके, अपने चित्रों का दर्शन करने लगे, ऋषि-मुनि बड़े-बड़े प्रसन्न हुए और प्रसन्न हो करके बेटा! देखो, ब्रहे वह भारद्वाज मुनि से वार्त्ता प्रगट करने लगे। महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज का जीवन, विज्ञानवेत्ताओं में सर्वोपरि रहा है, वह अपने में, अपने जीवन में मानो नाना प्रकार के विज्ञान की धाराओं में सदैव रत्त रहे है।

तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, आज मुझे कहीं से यह प्रेरणा प्राप्त हो रही है कि याग के सम्बन्ध में कुछ विचार दिया जाए, तो बेटा! देखो, याग अपने में अनूठा है, याग में मानो देखो, जितना भी शुद्ध वायुमण्डल होगा, जितने भी शुद्ध हृदय ग्राही विचार होंगे, उतना ही मानो देखो, एक मानव अपने में प्रकाश में रत्त होता हुआ यागमयी स्वरूप को जानता हुआ, सागर से पार होता है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेषता में न ले जाता हुआ, विचार क्या है कि मुनिवरों! देखो, महर्षि अपने में बड़ा अन्वेषण और विचार विनिमय करते रहे है। तो मुनिवरों! देखो, विचार आता रहता है कि हम यागां ब्रह्मे, यह याग इतना अनूठा क्रियाकलाप है, जो सृष्टि के प्रारम्भ से, वर्तमान के काल तक चल रहा है, परन्तु वही अग्निहोत्र, वही अग्नि प्रदीप्तता का क्रियाकलाप, प्रायः एक-सा बना रहा है और वह वनं ब्रह्वे कृता अध्यनम् मानो देखो, वह उसी का रूप धारण करता हुआ, इस सागर से पार होने का, वह प्रयास कर रहा है।

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष आभा में न जाता हुआ, विशेष चर्चा में प्रवेश न करता हुआ, मानो अपने एक प्रभु की महिमा का गुणगान गाता रहता हूँ। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या हो रहा था, विचार विनिमय में यह चल रहा था कि यागां ब्रह्वे उन्होंने यज्ञशाला में, यज्ञ करते हुए बेटा! अपने यन्त्रों में, अपने चित्रों का दर्शन किया, तो इससे ऊर्ध्वा में याग उनका और क्या हो सकता है।

तो मुनिवरों! देखो, अपने याग को सम्पन्न करने के पश्चात, वह अपने में विचार-विनिमय करते रहते थे और विचार-विनिमय यह कि यह यज्ञ कितना अनूठा है, और भारद्वाज मुनि महाराज ने कितना अन्वेषण किया है, कितना विचार अपने में लाने का प्रयास

किया है यह उनको श्रेय है, भारद्वाज मुनि महाराज को श्रेय होते हुए, अपने में आभा व्रत्यं अभ्योदय होता रहता है। तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, क्योंकि याग अपने में बड़ा अनूठा माना गया है। महर्षि वैशम्पायन की भी चर्चा इसी प्रकार की आती है। भारद्वाज मुनि महाराज ने तो यह कहा कि देखो, हमारा जो शब्द है, वह द्यौ लोक में जाता है और यन्त्रों में उसका चित्र बन करके, चित्रित होता रहता है। तो यह सब विज्ञान है, भौतिक विज्ञान, आध्यात्मिक विज्ञान अपने में मानो देखो, सर्वोपरि रहा है। दो प्रकार के विज्ञान में मानो देखो, यज्ञशाला प्रायः मस्तिष्कों में निहित हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, उस परमपिता परमात्मा का एक अनूठा यज्ञमयी है अनूठा एक यज्ञ और क्रियाकलाप चल रहा है जिसके ऊपर मानो अपने में मानवीयताओं की चर्चा में सदैव रत्त रहे है।

अग्नि का सहायक याग

तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें देना नहीं चाहता हूँ, विचार यह देने के लिए आया था कि हे मानव! तू अपने में मानवीयतव और मननशील बन करके, तू सागर से पार होता चल। तो मेरे प्यारे! देखो, याग अपने में बड़ा अनूठा है, याग के सम्बन्ध में बहुत-सी चर्चाएं आती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज जब वह अपने आसन में प्रारम्भ में विद्यमान थे, तो महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के द्वारा अध्ययन चल रहा था। महात्मा तत्त्व मुनि महाराज ने यह विचारा कि सु अब्रहा मानो उनको निमन्त्रित किया गया और निमन्त्रण देने के पश्चात सम्भवो सम्भवा हस्तः व्रत्यं देवं ब्रह्मा कृत लोकाः मेरे प्यारे! देखो, अपनी प्रतिपात प्रहा अश्वत हो करके मेरे प्यारे! देखो, याग में महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ नाना प्रकार के अनुष्ठान होना, नाना प्रकार के क्रियाकलापों में रत्त रहते थे। तो मुनिवरों! याग अपने में अनूठा है, अग्नि के समीप विद्यमान है, और अग्नि में मानो देखो, जब यागां ब्रह्मा हम याग किसे कहते है? याग कहते है जो मानो देखो, अग्नि का सहायक बन करके, अग्नि को प्रदीप्त करा देता है, तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय यह है कि आज का वाक् हमारा यह कहता है कि हम परमदेव, परमानन्द,

परमानन्दं ब्रह्मे देखो, उसकी आभा में, हम सदैव निहित होते रहे।

तो मुनिवरों! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपना यह निर्णय दिया, अपना वक्तव्य दिया, तो मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान के, नाना प्रकार के, यन्त्रों को ऋषि ने दृष्टिपात कराया और यन्त्रों को दृष्टिपात करा करके उन्होंने कहा-प्रभु! आपकी विज्ञानशाला को दृष्टिपात करना चाहते है। बेटा! भारद्वाज मुनि के यहाँ, जो नाना प्रकार की यज्ञशाला थी, वह यज्ञं ब्रह्मं कृतो लोकाम् नाना प्रकार की जो यज्ञं ब्रह्म कृति सम्भवो वाचां प्रमाणां ब्रीहि व्रतं जडहृततं ब्रह्वे मेरे प्यारे! देखो, यज्ञशाला में से उत्पत्ति हो करके, जो नाना यज्ञशालाएँ और भी थी, उनका दिग्दर्शन करने लगे। जब दर्शन करने लगे तो उन्होंने नाना प्रकार की यन्त्रशालाओं को दृष्टिपात कराया, नाना प्रकार की यज्ञशाला में विज्ञानशाला में, वह सदैव रत्त रहे, जहाँ ब्रह्मास्त्र, वरूणास्त्र नाना प्रकार की विज्ञानमयी मानो देखो, यज्ञशालाएँ थी। मुनिवरों! देखो, वे यज्ञशाला अपने में महान थी। ऋषि-मुनियों ने यह कहा कि-प्रभु! एक समय हम गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज के द्वारा, तुम्हारे आश्रम में पधारे थे। वहाँ उन्होंने यह प्रश्न किया था कि विज्ञान का अन्तिम परिणाम क्या होता है, तो मुनिवरों! देखो, उस समय तो भगवन! आप मौन हो गएं थे, हम आपसे जानना चाहते है कि यह जो विज्ञानशाला आपने हमें दृष्टिपात कराई है मानो देखो, वरूणास्त्र है, आग्नेयास्त्र है, ब्रह्मास्त्र है, सववृत्तिस्त्र है नाना प्रकार के अस्त्रों शस्त्रों का निर्माण होता रहता है। हे प्रभु! हम यह जानना चाहते है कि यह जो नाना प्रकार का जो यज्ञं ब्रह्मा कृतो यह जो नाना प्रकार का याग हो रहा है, प्रभु! इसकी प्रतिष्ठा ब्रह्मा, व्रत कहलाती है। तो हे प्रभु! आपका यह जो विज्ञान है यह बड़ा महान दृष्टिपात आ रहा है।

विज्ञान का अन्तिम परिणाम

तो मेरे प्यारे! देखो, इसमें महर्षि प्रवाहण ने आचार्य से यह प्रश्न किया कि महाराज! आपका विज्ञान तो बड़ा अद्वितीय है, तुम्हारे राष्ट्र में तो ऐसे-ऐसे यन्त्र विद्यमान है जो चन्द्र-यात्री है, और मंगल-यात्री है, और शुक्र-यात्री है नाना प्रकार की विज्ञान, अपने में

विज्ञानशालाएँ बन करके नृत्त कर रही है। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह कहा श्वत्यं ब्रहे कि तुम जानना क्या चाहते हो ऋषि ने कहा, प्रभु! हम यह प्रश्न करना चाहते है कि यह जो विज्ञान है इसका अन्तिम परिणाम क्या होता है? जहाँ नाना प्रकार की चित्रावलियों है, नाना प्रकार का विज्ञान है, इसके अन्तिम परिणाम को जानना चाहते हैं। तो महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा कि मेरे विचार में तो बड़ी ऊँची, एक उड़ान हमारे मस्तिष्क को स्पर्श करती जा रही है। वह मंगलं ब्रहे कि इस विज्ञान के दो ही परिणाम होते है एक विज्ञान मृत्यु बन करके रहता है और एक विज्ञान जीवन बन करके रहता है।

दूषित चित्रों का प्रभाव

मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि ने जब ऐसा कहा, तो श्वेतकेतु ने कहा-प्रभु! आपने ऐसा क्यों कहा? कि जीवन और मृत्यु कैसे बन करके रहता है? उन्होंने कहा-देखो, विज्ञान परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से मानव के मस्तिष्कों में नृत्त करता रहा है। परन्तु जिस भी काल में, विज्ञान का दुरूपयोग हुआ है मानो देखो, उसी काल में रक्त भरी क्रांतियाँ आई है। इसीलिए मेरा तो यह अतव्यं ब्रहे विचार रहता है कि ब्रह्मं ब्रहे देखो, इस विज्ञान का सदुपयोग होना चाहिए। विज्ञान में जब मेरी पुत्रियों का मानो देखो, नृत्त होना प्रारम्भ होता है, और उसमें अश्लीलता आ जाती है उसको छात्र और छात्रिकाएँ सब उसका दर्शन करते है तो उसका परिणाम क्या होता है, इसके ऊपर मानव नहीं विचारता है। इन नाना प्रकार की चित्रावलियों में नाना प्रकार के चित्रण होते रहते है और वहीं चित्रण एक समय आता है कि वही चित्र मानो देखो, मृत्यु की आभा में निहित हो जाते है। मेरे प्यारे! देखो, इस विज्ञान को बाल्य-बालिका, छात्र-छात्रिका सब श्रवण करते है और मनन भी करते है। परन्तु देखो, वह विज्ञान अपने में, वैसा ही बना रहा, जिस प्रकार का विज्ञान था।

आलस्य से अधिकार

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में, प्रायः ऋषि-मुनि अपना

प्रश्न और उत्तर देते रहते थे। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा कि विज्ञान को जब हम सदुपयोगिता में लाते है, जब दुरूपयोगिता में लाते है तो मानो उसमें ब्रह्मचारी, छात्र या छात्रिकाएँ सब अध्ययन करते है और जब उनके समीप इस प्रकार का नृत्त होने लगता है तो वह उस निर्वत्तते प्रहा, निर्वते सम्भव कृता विश्वं ब्रह्मणां ब्रहा मानो देखो, उस समय, जब यह सब दुरूपयोग की चित्रावली, मानव के समीप आती है, तो बाल्य, बालिका, छात्र, छात्रिकाएँ सब स्मरण करते है। तो मानो उसका परिणाम यह होता है कि मानो बेटा! देखो, जब इससे चित्रावलियों का दर्शन करता है, दुरूपयोग करता है विज्ञान का, तो उस समय बेटा! संगन्धनं वृत्ति ब्रणा सेवस्ता मेरे प्यारे! छात्र, छात्रिका सब श्रवण करते है। तो उस विज्ञान के दुरूपयोग से, ब्रह्मचारी क्या, छात्र, छात्रिकाओं का ब्रह्मचर्य दूषित हो जाता है और ब्रह्मचर्य के दूषित होने पर, मानव में आलस्य और प्रमाद आ जाता है। और जब आलस्य और प्रमाद आ जाता है तो उस समय बेटा! देखो, अधिकार की पुकार होने लगती है। और जिस काल में अधिकार रह जाता है, कर्त्तव्य नहीं रह पाता, कर्त्तव्य की विहीनता हो जाती है तो मानव देखो, अधिकार ही अधिकार को पुकारने लगता है। उस राजा के राष्ट्र में, समाज में, रक्तभरी क्रांतियाँ जा आती है।

समाज की ऊर्ध्व गति

मेरे प्यारे! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णन करते हुए कहा सम्भव ब्रह्मा लोकां वर्णाश्वन्धनं ब्रीहि व्रता यह वर्णन करते हुए कहा था हे ब्रह्मवेत्ताओं! जाओ, राजा से कहो कि तेरे राष्ट्र में विज्ञान का सदुपयोग हो, वह सदुपयोग ही मुनिवरों! देखो, समाज और राष्ट्र को ऊँचा बनाता है, वह कर्त्तव्यवाद में लाता है, जब वेद को और विज्ञान के आश्रित हो करके, कर्त्तव्य का पालन करता है, तो वह कर्त्तव्य ही मानव का जीवन माना गया है। जहाँ मेरी पुत्रियों के अश्लील चित्र आते है उन चित्रावलियों में यदि ऋषि-मुनियों के जीवन चरित्र आने लगे, उनके याग इत्यादियों के क्रियाकलाप आने लगे, तो मुनिवरों! देखो, समाज ऊँचा बन जाता है, वह समाज का जीवन बन करके रहता है।

परन्तु देखो, समाजं ब्रह्वे वह सामाजिक धारा में प्रवेश हो करके, अपने में अपनेपन का भान करते हुए, कर्त्तव्यवादी बन करके अपनी अन्तरात्मा के अनुसार बरतते हुए इस सागर से पार हो जाओ।

तो बेटा! देखो, महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज ने ऋषि-मुनियों के मध्य में विद्यमान हो करके ऐसा ही कहा। उन्होंने कहा-विज्ञान का दुरूपयोग, जिस भी काल में, बलवती हो जाता है उसी काल में रक्तमयी समाज बन गया। क्योंकि राष्ट्र अपने में राष्ट्र नहीं रहता है। तो विचार यह, सम्भव हम अपने में यह विचारते रहते है। हे मानव! तू अपनी मानवीयता को ऊँचा बना है हे मानव! तू अपनी मानवीयता को ऊर्ध्वा में ले चल, जिससे मानो देखो, तेरे जीवन का कल्याण हो जाए, अग्नि अप्रतम् यह अग्नि तेरे समीप न रहे, सदैव, तू प्रकाश में रत्त होता हुआ चल, तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार का विज्ञान है, इस विज्ञान का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए, इसका सदुपयोग होना चाहिए, सदुपयोग किसे कहते है बेटा! मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान में सार्थकता होनी चाहिए, मानो देखो, मनोवृत्तियों का एक साधन नहीं बनाना चाहिए, वह बनाते है तो अन्धकार में परिणत हो जाते है। अश्वतं ब्रह्मा अश्वतं लोकाम् मानो देखो, विचार क्या आया अन्तिम, हमारी सूत्रि व्रता का एक ही समन्वय रहा है, एक ही वृत्ति रही है कि मानव को अपनी मानवीयता में ऊर्ध्वा में गमन करना चाहिए और देखो, अपनी वृत्तियों में रत्त हो करके, प्रभु का दर्शन हो जाए।

प्रकाश में जीवन

तो मेरे प्यारे! देखो, इस प्रकार मानवीय विज्ञान, हमारे जीवन में प्रायः सदैव रत्त रहा है, प्रकाश में जीवन है, अन्धकार में मृत्यु है इसीलिए अन्धकार को त्यागों और प्रकाश को अपने में लाने का प्रयास करो। मेरे प्यारे! प्रकाश ही तो जीवन माना गया है। जिस प्रकाश के लिए परम्परागतों से मानव अपने में अनुसन्धान करता है, अपने में ही अपनेपन को विचारता रहता है तो मुनिवरों! देखो, इसलिए हमारा वाक् अप्रतं ब्रह्मा तो वेद के आचार्यो ने वर्णन किया कि विज्ञान का, जितना दुरूपयोग होगा, उतनी रक्त भरी

क्रांति आएगी और जितना विज्ञान का सदुपयोग होता रहेगा, उतना समाज ऊँचा बनता रहेगा। तो मैं वह विज्ञान का बेटा! विरोधी नही हूँ, विज्ञान होना चाहिए परन्तु विज्ञान का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए, यदि विज्ञान का दुरूपयोग हो गया तो विज्ञान समाज को, राष्ट्र को स्वतः निगल जाएगा। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है हे ममत्वं ब्रह्मा हे ममत्वं दिव्याम् मानो देखो, अपने में सदैव, अपनी प्रतिभा और विज्ञान की सार्थकता को विचारो।

तो मुनिवरों! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज ने बहुत पुरातन काल में, यह वाक् कहा था बेटा! मानो देखो, वाक् की इन्होंने रचना की, उसी रचना के आश्रित हो करके सदैव मानो देखो, हम उसी वाक्यों को सदैव क्रिया में ला करके, अध्ययनशील बनना चाहते है तो आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, विचार केवल यह कि भारद्वाज मुनि महाराज ने अपना मन्तव्य वर्णन कर दिया और देखो, वह शिकामकेतु उद्दालक ने भी अपने वाक् प्रगट कर दिए, परन्तु देखो, हम ब्रह्माश्वे मेरे प्यारे! देखो, हम जानना चाहते है। हे ब्रह्मणे व्रता हम देखो, तुम्हारा क्या रहस्य है याग के सम्बन्ध में? तो मुनिवरों! देखो, महर्षि सम्भवाः व्रतं देवं ब्रह्मे मेरे प्यारे! देखो, जब आचार्य से यह प्रश्न किया गया कि-हे आचार्य! तुम अपना कुछ निर्णय दो, तो वह निर्णयदायक, बन करके, अपना निर्णय देने लगे। तो बेटा! देखो, उनका निर्णय यह था कि जो मानव अपने में अपनेपन और विज्ञान को सार्थक बना करके आध्यात्मिकवाद में ले जाता है वही मानो बेटा! विचित्र माना गया है।

तो मेरे प्यारे! देखो, इस आभा के साथ, विचार केवल यह कि आज जब मैं अपने प्यारे वृत्तियों से, प्रश्न करने लगता हूँ तो उनका अन्तरात्मा गद्-गद् हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का यह विचार हमारा मानो सम्पन्न होने जा रहा है विचारों का यह जगत है, इसमें सदैव अपने-अपने रूप में स्थिर रहना चाहिए तो मेरे प्यारे! आओ, आज मैं तुम्हें एक आख्यिका वर्णन करने के लिए आया हूँ, जिस आख्यिका को मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें प्रायः निर्णय भी दिया है। उस आख्यिका का निर्णय देते अप्रतम्

तो भारद्वाज मुनि ने तो बेटा! अपना मन्तव्य दे दिया कि विज्ञान का दुरूपयोग होना ही समाज की मृत्यु है, राष्ट्र की मृत्यु है और देखो, विज्ञान का सदुपयोग होना ही मानो देखो, वही मानव का जीवन है, राष्ट्र का जीवन है। जैसे बेटा! महर्षि वैशम्पायन ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि राजा के राष्ट्र में भी, प्रत्येक स्थली पर याग होने चाहिए, प्रत्येक स्थलियों में देखो, क्रिया में रत्त रहना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, उसी के पश्चात मानव अपनी मानवीयता में सदैव निहित हो जाता है और मानवीयता को वह सार्थक रूप में लाना चाहता है।

आत्मीय कर्म

तो मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या, हम बेटा! अपने में विचार करते चले जाए कि यागां यज्ञ ब्रहे यह याग तो अपने में बड़ा विचित्र है बेटा! यह महान कहलाता है। मेरे पुत्रां! देखो, वह अपने आप में याग का निश्चयात्मक करने के पश्चात उन्होंने यह विचार लिया, जितना भी आत्मीय-कर्म है उस सर्वत्र का नाम याग माना गया है। बेटा! ऋषि-मुनि अपने-अपने कक्ष में जा पहुँचे। मानो नमः होते हुए अपने कक्षों की उन्होंने राह ली, वह अपने आसनों पर विद्यमान हो करके भी, उसी प्रकार का मनन और चिन्तन प्रारम्भ रहा, परन्तु मनन, चिन्तन प्रारम्भ के पश्चात वह स्वयं भी अपने में मौन हो गये।

तो आओ मेरे प्यारे! विचार-विनिमय क्या, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ इस प्रकार के यन्त्र विद्यमान थे, जब स्वाहा उच्चारण किया जाता तो वह द्यौ लोक में जाता दृष्टिपात आने लगा। यन्त्रों के द्वारा, तो इसीलिए याग अपने में बड़ा, एक महान है अब मानो देखो, मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् मधुमां दिव्यां गतं ब्रह्मा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने, अपनी बड़ी विचित्र उड़ाने उड़ी विचारों की, उनके विचारों में, सदैव महानता और याग के सम्बन्ध में, भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने रही है। उसी उड़ान के सम्बन्ध में, आज मुझे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने आज्ञा दी है कि मैं अपने दो शब्द उच्चारण करूँ। परन्तु इन शब्दों में उच्चारण करने के लिए, मैं अपने में

यह विचारता रहता हूँ कि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव का कितना अध्ययन किया हुआ, मनन किया हुआ, यह ज्ञान और विज्ञानमयी विचार रहा है। उन विचारों के आगे मैं क्या उद्गीत गाने लगूँ यह मानो मुझे कोई मार्ग प्राप्त नहीं होता, उसके पश्चात भी देखो, जहाँ यह हमारी आकाशवाणी, हमारा यह विचार जा रहा है वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ। मैं प्रायः उसे दृष्टिपात करता रहता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव को मैं प्रेरित करता रहता हूँ, कि याग के सम्बन्ध में कोई अपना विचार दिया जाए, तो उन्होंने याग और विज्ञान को ले करके, अपने विचार व्यक्त किये। मानो देखो, इन्हीं विचारों को ले करके मैं अपने यज्ञमान, मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ रहता है। हे यज्ञमान! मेरा अन्तरात्मा यह कहता कि तुम्हारा अन्तरात्मा मम ब्रहे मानो तुम्हारे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। सौभाग्यं ब्रह्मं व्रते देवाः अपनी मानवीय प्रवृत्ति इसी प्रकार निर्माणित रहे और वह सदैव प्रकाश की प्रवृत्ति बने रहे। सु अमृतम् मानो अपने में अमृत का पान करना और दूरिता को त्यागने के क्रियाकलापों में मानव को रत्त रहना चाहिए।

आत्म चर्चा

अब मुझे अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह परिचय कराना है, कि हे प्रभु! यह ऐसा काल चल रहा है, जिसको हम वाममार्ग का काल कहते है यह मानो कोई महान काल नहीं चल रहा है, वायु मण्डल दूषित हो रहा है मानो उसमें दोषारोपण हो रहा है। तो हे मेरे पूज्यपाद! सदैव विज्ञान इसमें लगा हुआ है कि यह दूषित वायुमण्डल कैसे समाप्त हो, यह दूषित मण्डल इसलिए बन गया है कि मानव के द्वारा देखो, वाणी में रस नहीं रहा है, मानव का आहार अशुद्ध होने से देखो, गृह जहाँ स्वर्ग बनते थे जैसे पूज्यपाद गुरुदेव ने देखो, गृहपत्य नाम की अग्नि का वर्णन किया था, वह अग्नि न रह करके, वहाँ विक्रान्त अग्नि हो गई है। शून्य बिन्दु पर अग्नि गृहों में चली गई है। जहाँ विराजमान होते है।

ब्रह्मवेत्ता की प्रेरणा

तो आत्म चर्चा नहीं रही, जब आत्म चर्चा गृहों में नही रहती, राष्ट्रवेत्ताओं में नहीं रहती,

मानवीय समाज में नहीं रहती तो यह रक्तमयी समाज बनता ही रहेगा। मानो देखो, रक्तमयी यह समाज बन रहा है, इसके मूल में यह राष्ट्रीयता मानो देखो, कि जब राजा पवित्र नहीं होता, अपने में अपनी कृतियों को नहीं विचारता, तो मानो देखो, समाज में रक्त भरी क्रांति तो आनी ही है। विचार आता रहता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कई काल में वर्णन किया और यह कहा कि जितनी भी समाज में मानो कुरीति और देखो, यह नाना प्रकार का रूढ़िवाद है। यह रूढ़िवाद ही मानो देखो, समाज और राष्ट्र को अग्नि के मुख में परिणत कर रही है। इसीलिए मेरा विचार यह रहता है कि अग्नि के मुखारबिन्दु से, यदि मानव को उपराम होना है तो राष्ट्र को यह विचारना है कि ये रूढ़ियाँ समाप्त होनी चाहिए, परमात्मा के नामों पर जो भिन्न-भिन्न प्रकार की रूढ़ियाँ हैं और उन रूढ़ियों में जो कुरीतियाँ आ गई है, उन रूढ़ियों में, जो द्रव्य की लोलुपता आ गई है, उन रूढ़ियों में, राष्ट्र में लोलुपता आ गई है, राजा को ब्रह्मवेत्ता होना चाहिए। वही तो राष्ट्र मानो इस प्रकार के क्रियाकलापों को मानो क्रिया, में लाने वाला बन सकता है और जो शब्द मानो मृत्यु से भयभीत हो रहा है वह देखो, ब्रह्मवेत्ता राजा ही अपने में कुरीतियों को नष्ट कर सकता है। मैंने यह वाक् कई काल में पूज्यपाद आपको वर्णन कराया था, यह वर्णन कराया था कि राजा को ब्रह्मवेत्ता बनना चाहिए और ब्रह्मवेत्ता बन करके, रूढ़िवाद को समाप्त करना चाहिए और यह रूढ़ियाँ मानो देखो, ईश्वर के नामां पर क्या इसमें राष्ट्रीयता में संकीर्णता आ जाती है, यह रक्त भरी क्रांति का मूल बन जाता है।

विज्ञान का दुरूपयोग

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी वर्णन कराया कि विज्ञान का सदुपयोग होना चाहिए, दुरूपयोग ब्रह्मे देखो, दुरूपयोग की चर्चा पूज्यपाद ने की और कहीं इन्होंने सदुपयोग की चर्चा की, मैं यह कहता रहता हूँ कि आधुनिक, जो प्रारम्भ का जगत चल रहा है इसमें विज्ञान का दुरूपयोग हो रहा, सदुपयोग नहीं हो रहा है। जिन चित्रावलियों में मेरी पुत्रियों का नृत्त हो रहा है, जिन पुत्रियों का नृत्त हो करके मेरी पुत्रियों का वही एक

विज्ञान का दुरूपयोग, एक ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी सभी श्रवण कर रहे है तो विज्ञान का दुरूपयोग हो रहा है, और यदि इसी विज्ञान में ऋषि-मुनियों के चरित्र आभा में, वह मानो चरित्र अव्रतम् उनके चरित्र आने प्रारम्भ हो जाते है तो वहीं चरित्र कर्त्तव्यवाद में लगाता है। तो इसीलिए राजा कर्त्तव्यवादी बन जाए। समाज भी कर्त्तव्यवादी बने, विज्ञान का सदुपयोग हो जाए तो मानो आध्यात्मिकवाद पनपने लगेगा। आध्यात्मिकवाद के न होने पर, गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन न रहने से यह सब मानो अन्धकार ही अन्धकार दृष्टिपात आता है। आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाता हूँ मुझे कोई विशेष चर्चा नहीं देनी है, केवल यह कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्रियाकलापों में, तेरे गृह में मानो द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, द्रव्य के सदुपयोग होने से याग इत्यादि देवतव को प्राप्त होते रहे, तो यह आज का हमारा विचार अब सम्पन्न होने जा रहा।

पूज्यपाद गुरुदेवः-मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी के हृदय में, एक दाह बनी रहती है, सदैव यह दाह बनी रहती है, कि समाज कैसे ऊँचा बने और राष्ट्रवाद कैसे महान और पवित्र बने, यह सदैव इनके हृदयों में दाह बनी रहती है। इन्होंने एक वर्णन किया जो पुरातन काल में प्रायः होता रहा है। आधुनिक काल का तो हमें प्रतीत नहीं, मेरे पुत्र ने एक बड़ा वर्णन किया कि राजा ब्रह्मवेत्ता हो और ब्रह्मवेत्ता राजा होने से इस समाज को ऊँचा बनाए और उसमें महानता जैसे हमारे यहाँ पूर्व काल में महाराजा अश्वपति हुए ओर भी नाना राजा इस प्रकार के हुए, जिनके राष्ट्रों में केवल याग होते रहते थे, समय-समय पर वैदिक क्रियाएँ होती रही मानो देखो, वह समाज में एक महानता का दर्शन होता रहा, प्रायः एक राजा महान और सुचरित्रवान होता है यह क्रियाकलाप जब हुआ करते है तो मेरे प्यारे महानन्द जी ने बड़े प्रिय, अपने शब्द उच्चारण किए है। प्रभु, हो सकता है वह समय आयेगा, जब इच्छाएं इनके वाक्यों की पूर्ति हो जाए, यह समय अपने को सौभाग्यशाली हम सब स्वीकार करेंगे, आज का विचार अब यह समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। दिनांक-०८-०५-१९८८-माडन टाउन,

पानीपत